वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक
अगस्त 01-15, 2025

हिन्दू विश्व

विश्व हिन्दू परिषद
केन्द्रीय प्रबन्ध समिति बैठक

@eHinduVishwa
/HinduVishwa

विश्व हिन्दू परिषद केन्द्रीय प्रबंध समिति बैठक 19-20 जुलाई, 2025 जलगांव (महाराष्ट्र)

जयपुर प्रांत में प्रांतीय संत मार्गदर्शक मण्डल की बैठक को संबोधित करते विहिप अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी

विहिप के प्रांत अध्यक्ष व पूर्व न्यायाधीश मान्यवर पवन कुमार जी को देहदान करने का संकल्प पत्र भेंट करते वहिप के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार जी

पंढरपुर में विहिप के धर्माचार्यो की व्यापक बैठक को संबोधित करते विहिप केन्द्रीय सहमंत्री श्री हरिशंकर जी

पटना क्षेत्र के धर्मप्रसार विभाग की क्षेत्र बैठक में उपस्थित क्षेत्र संगठन मन्त्री श्री आनन्द जी पाडे, क्षेत्र मंत्री श्री वीरेन्द्र विमल, केन्द्रीय मंत्री श्री सुधांशु मोहन पटनायक तथा प्रांत के पदाधिकारी

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

01-15 अगस्त, 2025
श्रावण शुक्ल - भाद्रपद कृष्ण पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2082, युगाब्द- 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

तीन परिधियाँ क्रमशः वसु को, रुद्र को और आदित्य को समर्पित की जाती हैं। इस तथ्य को द्युलोक और पृथ्वीलोक की शक्तियाँ जानें। मित्रावरुण वर्षों से उनकी रक्षा करें। घृतयुक्त हव्य का स्वाद लेते हुए पक्षी (यज्ञीय ऊर्जा) मरुतों का अनुगमन करते हुए स्वाधीन किरणों में परिवर्तित होकर द्युलोक में पहुँचें। वहाँ से वर्षा लेकर आएँ। हे यज्ञाग्ने ! आप नेत्रों के रक्षक हैं, हमारे नेत्रों की रक्षा करें।

- यजुर्वेद

विश्व हिन्दू परिषद केन्द्रीय प्रबंध समिति बैठक

05

पंच परिवर्तन से बदल जाएगा समाज का चेहरा-मोहरा	19
धर्मांतरण के विरुद्ध बने कठोर कानून	21
छांगुर का धर्मांतरण नेटवर्क	22
प्रयागराज में दलित बच्चियों का धर्म बदलकर आतंकवादी बनाने की साजिश का बड़ा खुलासा	23
जयपुर प्रांत की संत मार्गदर्शक मंडल बैठक सम्पन्न	23
यूरिक एसिड की समस्या : 17 घरेलू नुस्खे	24
पटना क्षेत्र की धर्मप्रसार बैठक संपन्न	24
विमान दुर्घटना के पीड़ितों की हर सम्भव सहायता किया बजरंग दल ने	25
विहिप के धर्माचार्यों की व्यापक बैठक में समस्त महाराज, संत मंडली की आग्रही भूमिका	26

सुभाषित

नृपस्य चित्तं, कृपणस्य वित्तम् मनोरथाः दुर्जन मानवानाम।
त्रिया चरित्रं, पुरुषस्य भाग्यम् दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः।।

'राजा का मन, कंजूस का धन, दुर्जनों की इच्छा, स्त्री का चरित्र और पुरुष का भाग्य, देवता भी नहीं जान पाते, तो मनुष्य कैसे जान सकता है ?'

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

हिंदुओं को तोड़ने के षड्यंत्रों के विरुद्ध एकजुटता का आह्वान

आज का युग परिवर्तन और पुनर्जागरण का युग है। भारत में हिंदू समाज एक बार पुनः जाग रहा है, अपनी जड़ों को पहचान रहा है, परंतु इसी कालखंड में एक अत्यंत भयावह वास्तविकता भी हमारे सम्मुख है—हिंदुओं को खंडित करने के सुनियोजित षड्यंत्र। क्षेत्र, जाति, भाषा, बोली, रीति—नीति और उपासना—पद्धतियों को लेकर हमारे समाज को विभाजित करने का कुचक्र निरंतर चल रहा है। यह विडंबना ही है कि जो विविधता हमारी संस्कृति की शक्ति है, वही षड्यंत्रकारियों के लिए हमारा दुर्बल पक्ष बन रही है।

इतिहास साक्षी है कि हिंदू जब भी एकजुट हुआ, उसने इतिहास को मोड़ा है। पर जब वह जातियों में बँटा, प्रांतों में उलझा, भाषाओं में भिड़ा—तो बाह्य शक्तियों ने उसे आसानी से रौंद डाला। आज भी वही षड्यंत्र नए रूप में, "सामाजिक न्याय", "संविधान खतरे में है", "भाषाई अधिकार", "क्षेत्रीय स्वायत्तता" जैसे शब्दों की आड़ में किया जा रहा है। कभी जाति जनगणना के नाम पर, कभी विशेष समूहों को आरक्षण की आड़ में, तो कभी दक्षिण बनाम उत्तर या पूर्व बनाम पश्चिम के कृत्रिम झगड़ों में हिंदू समाज को आपस में लड़ाया जा रहा है।

इन चुनौतियों का समाधान केवल और केवल संगठित हिंदू शक्ति ही है। जाति नहीं—जाति से ऊपर उठकर 'हिंदू' ही हमारी पहचान हो। भाषा नहीं—संस्कृति हमारी एकता का सूत्र बने। मतभेद नहीं—मत—भिन्नता में भी समन्वय हो। यही सनातन दृष्टिकोण है। यही दृष्टि हमें उन षड्यंत्रों से मुक्त कर सकती है, जो हमें आपस में तोड़कर हमारी शक्ति क्षीण कर रहे हैं।

आज जब दुनियाँ भारत को आशा की दृष्टि से देख रही है, तब हिंदू का आत्मविश्वास, उसका पारिवारिक जीवन, उसकी आस्थाएँ और उसकी जीवनशैली पूरे विश्व को मार्गदर्शन दे सकती है। परंतु यह तभी संभव है जब हम अपने भीतर की फूट को समाप्त करें। हमें समझना होगा कि यदि हम स्वयं अपने समाज में जाति, उपजाति, गोत्र, बोली, प्रांत या भाषा के आधार पर दूसरों को हीन समझते रहेंगे, तो हम उस हिंदू नवोत्थान के युग में प्रवेश नहीं कर पाएंगे, जिसकी ओर विश्व प्रतीक्षा कर रहा है।

विश्व हिंदू परिषद और अन्य हिंदू संगठन इसी कार्य में संलग्न हैं—एक ऐसी शक्ति तैयार करने में जो राष्ट्रभक्त हो, धर्मनिष्ठ हो, और जाति—पंथ से ऊपर उठकर अखिल हिंदू समाज को जोड़ने वाली हो। यह कार्य केवल संगठनों का नहीं, हम सभी का है। जब गाँव—गाँव, नगर—नगर में हिंदू अपने कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होगा, तब कोई षड्यंत्र, कोई विभाजनकारी नीति हमें पराजित नहीं कर सकेगी।

आज यह भी आवश्यक है कि हम अपने बच्चों में यह बोध कराएँ कि उनकी प्राथमिक पहचान जाति या प्रांत नहीं, बल्कि 'हिंदू' है। हमारे विद्यालयों, सामाजिक आयोजनों, मीडिया और परिवारों में यह चिंतन गहराए कि हम सब एक साझा सांस्कृतिक चेतना के अंग हैं। यदि हम प्रत्येक मंदिर, उत्सव, पर्व और तीर्थ को सामाजिक समरसता के केंद्र बनाएँ, तो हजार साल पुराने विष को भी निर्मूल किया जा सकता है।

आज जब दुनियाँ भारत को आशा की दृष्टि से देख रही है, तब हिंदू का आत्मविश्वास, उसका पारिवारिक जीवन, उसकी आस्थाएँ और उसकी जीवनशैली पूरे विश्व को मार्गदर्शन दे सकती है। परंतु यह तभी संभव है जब हम अपने भीतर की फूट को समाप्त करें। हमें समझना होगा कि यदि हम स्वयं अपने समाज में जाति, उपजाति, गोत्र, बोली, प्रांत या भाषा के आधार पर दूसरों को हीन समझते रहेंगे, तो हम उस हिंदू नवोत्थान के युग में प्रवेश नहीं कर पाएंगे, जिसकी ओर विश्व प्रतीक्षा कर रहा है।

विश्व हिन्दू परिषद - केन्द्रीय प्रबंध समिति बैठक

(श्रावण कृष्ण नवमी, दशमी, वि.सं. 2082 तदनुसार 19-20 जुलाई, 2025)
'बालानी रिसोर्ट', एम.आई.डी.सी., जळगाँव, देवगिरि (महाराष्ट्र)

महामंत्री प्रतिवेदन (जनवरी से जून, 2025)

एक दृष्टिक्षेप में (प्रकोष्ट में दर्शायी गई संख्या गत छमाही की है)

संगठन – विभाग–349 (339), जिला–1,156 (1,210), प्रखण्ड–10,656 (10,103), खण्ड–1,00,395 (92,710), समिति–79,960 (88,686), सत्संग–28,556 (30,882), बजरंग दल संयोजक–63,283 (67,766), मातृशक्ति संयोजिका–9,252 (7,922), दुर्गावाहिनी संयोजिका–11,297 (9,172), बलोपासना केन्द्र–1,467 (1,722)।

कार्य – बाल संस्कार केन्द्र–1,894 (2,611), संस्कारशालाएँ–1,045 (1,171), प्रतिभा विकास केन्द्र–681, सेवा कार्य–6,399 (4,410), गोरक्षा (कसाईयों से बचाया)–1,42,884 (1,05,369), परावर्तन–10,045 (11,299), धर्मान्तरण से बचाया–70,000 (31,848), हिन्दू कन्या रक्षा–6,745 (4,413), युवाओं को रोजगार–3,341 (7,382), रामायण परीक्षा (नैतिक शिक्षा) : जिला–320, विद्यालय–3,518, विद्यार्थी–3,86,602 भाषा–हिन्दी, अँग्रेजी, मराठी, तमिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़, गुजराती एवं असमिया। पर्यावरण वृक्षारोपण (बजरंग दल+मातृ+दुर्गा0) – 6,01,927।

कार्यक्रम – समरसता गोष्ठी/सम्मेलन–530 स्थान–उपस्थिति 17,540, समरसता दिवस कार्यक्रम – स्थान–3,480–उपस्थित संख्या–2,20,889, रामोत्सव – स्थान–43,842 (48,093)–उपस्थित संख्या–28,07,523 (27,63,669), रामनवमी शोभायात्रा स्थान–3,833 (2,750) उपस्थित संख्या–67,31,257 (60,73,245), हनुमान जन्मोत्सव स्थान–6,508 (10,397)–उपस्थित संख्या–21,00,937 (19,69,427), सीतानवमी कार्यक्रम स्थान–4,550 (3,672)–उपस्थित संख्या–1,22,650 (92,858)।

प्रशिक्षण – बजरंग दल वर्ग उपस्थित संख्या–4,778 (4,707)–स्थान प्रतिनिधित्व–2,116 (2,036), दुर्गावाहिनी वर्ग उपस्थित संख्या–6,081 (6,712)–स्थान प्रतिनिधित्व–2,048 (2,492), मातृशक्ति वर्ग उपस्थित संख्या–2,417 (1685)–स्थान प्रतिनिधित्व–1,021 (983), परिषद शिक्षा वर्ग उपस्थित संख्या–1,983 (2,755)–स्थान प्रतिनिधित्व–1,124 (909)।

कार्यवृत्त

बजरंग दल

1. प्रांत टोली में कुल कार्यकर्ता	–	284	2. विभाग संयोजक	–	237
3. जिला संयोजक	–	1,043	4. टोली कार्यकर्ता	–	1,742
4. प्रखण्ड संयोजक	–	6,479	5. कुल इकाइयाँ (जिसमें 20 कार्यकर्ता हों)	–	18,210
6. कुल संयोजक – (सभी इकाई सहित)	–	63,283			
7. साप्ताहिक मिलन	–	9,477	औसत उपस्थिति	–	1,136
8. बलोपासना केंद्र	–	1,467	औसत उपस्थिति	–	944
9. मासिक बैठक वाले प्रखण्ड	–	2,877	मासिक वर्ग वाले प्रखण्ड	–	1,497

10. गत 6 माह में

(क) युवाओं को रोजगार – 3,341. (ख) कन्या रक्षा – 4,118 (ग) गौवंश रक्षण – 1,30,323
(घ) धर्मान्तरण से बचाया – 10,838 (ङ) परावर्तन – 1,645

11. कार्यक्रम वृत्त

(अ) सेवा सप्ताह (1 जुलाई से 7 जुलाई 2025) – मेडिकल कैम्प / वृक्षारोपण

- ❖ कैम्प कितने जिलों में लगे – 309, कितने स्थानों पर कैम्प लगे – 1,330
- ❖ केम्प में उपस्थित कार्यकर्ता – 10,619, कैम्प में कितने डॉक्टर लगे – 2,626
- ❖ जांच लाभार्थी कितने – 66,529 दवाई लाभार्थी संख्या – 51,037
- ❖ वृक्षारोपण कुल वृक्ष लगाए – 5,70,507

(आ) त्रिशूल दीक्षा

प्रखण्ड – 756. उपस्थित संख्या – 93,997

(इ) बलोपासना दिवस (हनुमान जन्मोत्सव)

कार्यक्रम स्थान	–	5,762	उपस्थित संख्या	–	5,71,349
शारीरिक प्रदर्शन (कब्बड्डी) करने वाले स्थान	–	607	उपस्थित संख्या	–	51,575

(ई) प्रान्त शौर्य प्रशिक्षण वर्ग

स्थान	–	1,667	उपस्थित कार्यकर्ता	–	4,433
पूर्णकालिक	–	129	एक वर्ष के लिए	–	84,
			छः माह के लिए	–	102

मातृशक्ति

प्रांत संयोजिका	–	40	प्रांत टोली	–	35			
विभाग संयोजिका	–	284	जिला संयोजिका	–	914			
प्रखंड संयोजिका	–	3,716	अन्य संयोजिका	–	1,105	कुल संयोजिका	–	9,252
बाल संस्कार केन्द्र	–	1,489	सत्संग	–	2,828			

कार्यक्रम

वर्ष प्रतिपदा – स्थान 1,341 रामोत्सव स्थान – 3,087 सीता नवमी – 4,850

आपरेशन सिंदूर – 186 कार्यक्रम हुए जिनमें उपस्थित संख्या लगभग 9,300 रही

सेवा कार्य

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र	–	86	मेंहदी, श्रृंगार प्रशिक्षण	–	125
योग केंद्र एवं स्वास्थ्य शिविर	–	169	कोचिंग सेंटर / कम्प्यूटर	–	46
मंदिर स्वच्छता सेवा	–	993 मंदिर	वृक्षारोपण	–	21,420

मातृशक्ति प्रांत वर्ग

प्रांत – 40, वर्ग – 43, बहनों की संख्या – 3225

दुर्गावाहिनी

प्रांत संयोजिका	–	35	प्रांत सह संयोजिका	–	47	प्रांत टोली	–	116
विभाग संयोजिका	–	115	विभाग सह संयोजिका	–	19			
जिला संयोजिका	–	761	जिला सह संयोजिका	–	480	जिला टोली संख्या	–	350
प्रखंड संयोजिका	–	3,718	प्रखंड सह संयोजिका	–	932			
प्रखंड टोली संख्या	–	765	अन्य संयोजिका	–	5,089	कुल संयोजिका	–	9,301
कुल टोली संख्या	–	813						
शक्ति साधना केंद्र	–	717	मिलन केंद्र	–	1,343	बाल संस्कार केंद्र	–	905
वर्ष प्रतिपदा कार्यक्रम	–	1,650	सीतानवमी कार्यक्रम	–	2,493	रानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस	–	559
दुर्गावाहिनी वर्ग	–	43	शिक्षार्थी संख्या	–	5,500			
सेवा कार्य	–	119	सिलाई केंद्र	–	59	कोचिंग सेंटर	–	60
कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र	–	16	मेंहदी प्रशिक्षण केंद्र	–	142			
श्रृंगार प्रशिक्षण केंद्र	–	55	वृक्षारोपण	–	10,000 से अधिक			

सत्संग

१ – **श्री राम महोत्सव** – कुल सत्संग स्थान – 8,741, कुल संख्या – 2,92,647

२ – **सत्संग** – 28,207

३– **सत्संग द्वारा स्थाई सेवा कार्य** – प्रांत – 17, जिला – 34 सेवा कार्य स्थान – 59

सेवा का प्रकार

मंदिर सफाई, गाय को रोटी और हरा चारा, निःशुल्क चिकित्सा, निःशुल्क शिक्षा, मेंहदी प्रशिक्षण, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, सिलाई केन्द्र, निःशुल्क अन्नदान, पुस्तकालय।

४ – बाल संस्कार केन्द्र

प्रांत – 30 जिला – 159 कुल संख्या – 244

५ – प्रशिक्षण वर्ग

प्रांत स्तरीय – स्थान – 3 (पंजाब, ओडिशा पूर्व, दक्षिण कर्नाटक), कुल संख्या – 192

सत्संग प्रमुख संख्या – 22
विभाग स्तरीय–उत्तर बंग, 2 विभाग, कुल संख्या 119, जिला सत्संग प्रमुख – 4
६ – सत्संग के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन – छुआछूत उन्मूलन – मेरठ प्रांत, बुलंदशहर और मुरादाबाद जिलों में बाल्मीकि समाज के लोगों को समाज की मुख्य धारा में लाया गया।

मध्य भारत प्रांत – भोपाल विभाग – भेल जिला का माँ कंकाली प्रखंड छुआछूत भाव से मुक्त हुआ। मंदिर में सबको दर्शन की सुविधा मिली, एक श्मशान में सबको दाह संस्कार की सुविधा दी गई। एक ही पानी के स्रोत से सबको पीने के लिए पानी व्यवहार करने की दृष्टि से सुयोग दिया गया। उस प्रखंड में सात सत्संग चल रहे हैं।

विश्व समन्वय–अंतर्राष्ट्रीय समन्वय (महत्वपूर्ण गतिविधियाँ)

अमेरिका की वीएचपी – अमेरिका की वीएचपी ने 16 से 18 मई 2025 तक बोस्टन में चिंतन बैठक आयोजित की और पिछले 55 वर्षों में किए गए कार्यों की समीक्षा की, विभिन्न परियोजनाओं का मूल्यांकन किया – उनकी सफलताओं और विफलताओं दोनों का आकलन किया और अगले 10 वर्षों के लिए आगे बढ़ने के तरीके पर चर्चा की। इस बैठक के नतीजे अमेरिका के वीएचपी की अगली गवर्निंग काउंसिल बोर्ड की बैठक में प्रस्तुत किए जाएंगे।

सपोर्ट–ए–चाइल्ड (एसएसी) – यह वीएचपीए सेवा पहल 14 राज्यों में 21 अध्यायों में संचालित है और यह जारी है। यह परियोजना सेवा आयाम द्वारा संचालित है और मुख्य रूप से वीएचपी अमेरिका द्वारा समर्थित है।

बाल विहार – एक साप्ताहिक दो घंटे का कार्यक्रम जो हिंदू संस्कृति में गर्व को बढ़ावा देता है और हिंदी भाषा सीखने को बढ़ावा देता है। वर्तमान में अटलांटा, बोस्टन, जर्मनटाउन, एशबर्न और गेन्सविले में सक्रिय, यह 60 से अधिक स्वयंसेवकों के सहयोग से 400 से अधिक छात्रों को सेवा प्रदान करता है।

प्रकाशन – हिंदू विश्व, एक त्रैमासिक पत्रिका और 2025 का थीम वाला हिंदू कैलेंडर महत्वपूर्ण हिंदू घटनाओं और विषयों पर प्रकाश डालता है।

ऑस्ट्रेलिया की वीएचपी – ऑस्ट्रेलिया की वीएचपी ने 3 मई 2025 को पर्थ, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में 'गतिशील समुदाय : जीवंत ऑस्ट्रेलिया' विषय के तहत 8वें ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन में मंत्रियों, संसद सदस्यों और महापौरों के साथ–साथ 35 संगठनों के 230 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन के बाद, HOTA फोरम लॉन्च किया गया। इसके बाद इसने ऑस्ट्रेलिया में हिंदू समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों पर चर्चा करने और आगे का रास्ता तलाशने के लिए विभिन्न हिंदू संगठनों के साथ अपनी पहली बैठक की।

होता फोरम एनएसडब्ल्यू – 11वां वार्षिक हिंदू संगठन, मंदिर और एसोसिएशन (HOTA) फोरम NSW 1 जून 2025 को सिडनी में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में मंदिरों, स्कूलों और सामुदायिक संघों सहित 55 हिंदू संगठनों ने भाग लिया। संघीय मंत्री, माननीय स्कॉट फार्लो ने भी भाग लिया।

इस वर्ष, ऑस्ट्रेलिया की वीएचपी ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की और संघीय सरकार से औपचारिक मान्यता प्राप्त की। वीएचपी को ऑस्ट्रेलियाई कराधान कार्यालय (एटीओ) द्वारा डिडक्टिबल गिफ्ट प्राप्तकर्ता (डीजीआर) का दर्जा दिया गया है। परिणामस्वरूप, ऑस्ट्रेलिया के वीएचपी को दिया गया कोई भी दान अब कर–मुक्त है।

ऑस्ट्रेलिया के विहिप द्वारा संचालित हिंदू धर्म और संस्कृत कक्षाएँ (विशेष धार्मिक शिक्षा) जारी हैं और लगातार बढ़ रही हैं।

न्यूजीलैंड की विहिप – सामुदायिक सहभागिता और आउटरीच– बुधवार, 26 फरवरी 2025 को हिंदू हेरिटेज सेंटर में महाशिवरात्रि मनाने के लिए रोटोरुआ हिंदू समुदाय भक्ति और सांस्कृतिक सद्भाव की भावना से एक साथ आया। शाम को पवित्र अनुष्ठानों, आध्यात्मिक संगीत और एकता की मजबूत भावना से चिह्नित किया गया, जिसमें 100 से अधिक भक्त और समुदाय के सदस्य शामिल हुए। न्यूजीलैंड की वीएचपी के एक प्रभाग, हिंदू महिला फोरम (एचडब्ल्यूएफ) ने महिला सशक्तिकरण, कल्याण और पर्यावरण प्रबंधन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए 22 फरवरी 2025 को अपना दूसरा सफल अल्पाइन मार्च पूरा किया।

थाईलैंड की वीएचपी – अयोध्या राम मंदिर में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ के अवसर पर, थाईलैंड की वीएचपी एसोसिएशन ने 25 जनवरी 2025 को भारत–थाई चैंबर ऑफ कॉमर्स (आईटीसीसी), साथोर्न सोई 1 में एक समारोह का आयोजन किया। 16वां होलिका दहन उत्सव 13 मार्च 2025 को आर्य समाज बैंकॉक के परिसर में आयोजित किया गया था। इस उत्सव में इस्कॉन के परम पावन वेद व्यास प्रिय स्वामी महाराज और बोर्ड के अध्यक्ष, थाईलैंड कन्वेंशन और प्रदर्शनी ब्यूरो (टीसीईबी) डॉ. अचका सिबुनरूंग की उपस्थिति थी। होलिका दहन के बाद रंगोत्सव मनाया गया, जो रंगों का एक जीवंत उत्सव था।

हिंदू नव वर्ष (हिंदू नव वर्ष) 30 मार्च 2025 को एसवी सिटी, बैंकॉक में मनाया गया, जिसका समापन भगवान श्री राम जी के जन्म उत्सव के साथ हुआ।

सेवा – म्यांमार भूकंप राहत – अप्रैल 2025। थाईलैंड के वीएचपी एसोसिएशन ने म्यांमार में भूकंप के पीड़ितों के समर्थन के लिए 20,000 अमेरिकी डॉलर एकत्र किए।

कनाडा की वीएचपी – कनाडा की वीएचपी ने 24 और 25 मई 2025 को ब्रैम्पटन, टोरंटो, कनाडा में ऐतिहासिक प्रथम राष्ट्रीय हिंदू

सम्मेलन का आयोजन किया। यह कनाडा की विहिप के पुनरुत्थान से कम कुछ नहीं है। दो दिवसीय सम्मेलन में 400 प्रतिनिधियों और 47 हिंदू संगठनों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान HOTA फोरम को सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया। इसके बाद, कनाडा की वीएचपी ने वैंकूवर (ब्रिटिश कोलंबिया), हैलिफैक्स, एडमॉन्टन और कैलगरी में नए अध्याय शुरू किए।

विधि प्रकोष्ठ

1. संगठन

- ❖ 41 प्रांतों में टीमों का गठन किया गया है, इनमें से कई टीमें जिला स्तर पर भी स्थापित की गई हैं।
- ❖ अधिकांश प्रांतों में नियमित आभासी बैठकें आयोजित की जा रही हैं, जिससे टीमों को जुड़े रहने, अपडेट साझा करने और चल रहे और आगामी कानूनी मामलों के लिए रणनीति बनाने की अनुमति मिलती है।
- ❖ केंद्रीय टीम सेमिनार, कार्यशालाएँ, समूह बैठकों सहित जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने में सक्रिय रही है। विभिन्न लॉ कॉलेजों में व्याख्यान भी शुरू किए गए हैं, जिसका उद्देश्य कानून के छात्रों को हिंदू–संबंधित कानूनी मुद्दों के बारे में शिक्षित करना है।
- ❖ हिंदुओं को सीधे कानूनी सहायता प्रदान करने के लिए हिंदू कानूनी क्लिनिक (हिंदू कानून सहायता केंद्र) स्थापित करने के लिए कदम उठाए गए हैं। ऐसे क्लीनिक स्थापित किए गए हैं– 1 गुवाहाटी में और 7 अवध प्रांत में। अवध प्रांत में टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर शुरू हो गया है।
- ❖ विभिन्न मुकदमों में हिंदू समुदाय के सभी सदस्यों और सभी आयामों के कार्यकर्ताओं को कानूनी सहायता प्रदान करने के लिए विहिप के अन्य आयामों के साथ समन्वय के प्रयास शुरू कर दिए गए हैं।

2. प्रमुख गतिविधियाँ

- ❖ 18 मई, 2025 को दिल्ली में न्यायाधीशों की बैठक आयोजित की गई। उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश एक साथ आये। ऐसे न्यायाधीशों के लिए भी व्यवस्था की गई थी, जो दिल्ली से बाहर भारत भर के विभिन्न राज्यों में रहते थे, वे वीडियो–कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक में शामिल हो सकते हैं। लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) राज शुक्ला, जो वर्तमान में यूपीएससी सदस्य हैं, ने 'ऑपरेशन सिन्दूर' पर सभा को संबोधित किया।
- ❖ लखनऊ, जयपुर, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, कर्णावती, मेरठ और गुवाहाटी में प्रांतों और क्षेत्र स्तरों पर कई सेमिनार, कार्यशालाएँ और सम्मेलन आयोजित किए गए हैं। जिला टीमों ने लगभग हर महीने लखनऊ, कर्णावती और भोपाल क्षेत्र में कई बैठकें, सेमिनार आयोजित किए।
- ❖ कानूनी सेल ने इस अवधि के दौरान छत्तीसगढ़ और राजस्थान राज्यों में धार्मिक रूपांतरण अधिनियमों का मसौदा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- ❖ उच्च न्यायालय लखनऊ में 527 प्रतिभागियों के साथ रामोत्सव का आयोजन किया गया।

3. कानूनी सहायता

- ❖ विशेष रूप से तेलंगाना, महाकौशल, अवध, गौरक्ष, काशी, मध्य भारत, दक्षिण बंग, जयपुर, जोधपुर आदि कई प्रांतों में लव जिहाद के कई मामले सुलझाए गए, पीड़ितों को बचाया गया और आरोपियों को जेल भेजा गया।
- ❖ कई जमानत याचिकाएँ दायर की गईं, गौरक्षकों को जमानत पर रिहा कराया गया और विभिन्न प्रांतों में गौवंश को बचाया गया।
- ❖ तेलंगाना में महाराणा प्रताप रैली, पुस्तक उद्घाटन समारोह आयोजित करने के लिए रिट याचिकाएँ दायर की गईं, शोपुर के विधायक बाबू जंडेल के खिलाफ महाकौशल प्रांत में एफआईआर दर्ज की गई।

भगवान शिव पर अश्लील टिप्पणियाँ

- ❖ अवध HC की टीम HC के आदेश से बहराइच के सूर्य मंदिर में सैयद सालार मसूद गाजी के वार्षिक उर्स को रोकने में सफल रही।
- ❖ कानूनी सेल की शुरुआत पर, सरकार यूपी में नेपाल के सीमावर्ती इलाकों में कई अवैध मस्जिदों को ध्वस्त कर दिया और एक ताजिया को गौरक्ष प्रांत में रोक दिया गया।
- ❖ उत्तर पूर्व प्रांत में बचाए गए 4 परिवारों और 2 लव जिहाद पीड़ितों की घर वापसी।
- ❖ (प.) मुर्शिदाबाद, दक्षिण बंग में रामनवमी जुलूस की अनुमति प्राप्त की गई।

4. आगे बढ़ना

1. जिला स्तर पर प्रत्येक प्रांत में हिंदू लीगल क्लीनिक का विस्तार करें।
2. सेमिनार और कार्यशालाएँ बढ़ाएँ – प्रांत और जिला दोनों स्तरों पर अधिक सेमिनार और कार्यशालाएँ आयोजित की जाएंगी।
3. उच्च न्यायालय, जिला न्यायालय और मजिस्ट्रेट न्यायालय स्तर पर कानूनी टीमों का गठन।
4. सभी टीम स्तरों पर नियमित टीम बैठकें मासिक / पाक्षिक या तो भौतिक रूप से या वस्तुतः आयोजित की जाएंगी।
5. लॉ कॉलेजों में व्याख्यान
6. प्रांतों में न्यायाधीशों की बैठकें

धार्मिक पुंज

मठ मंदिर एवं अर्चक पुरोहित सम्पर्क विभाग

प्रांत बैठकें

01. 14 अप्रैल को देवगिरी, 20 अप्रैल को महाकौशल और 01 जून को इन्द्रप्रस्थ प्रांतों की बैठकें सम्पन्न हुईं।

02. **पुजारी प्रशिक्षण वर्ग** – उत्तर कर्नाटक प्रांत : अठनी में 29–30–31 मई को तीन दिवसीय पुजारी प्रशिक्षण वर्ग संपन्न हुआ, जिसमें कुल 82 बंधु/भगिनी सम्मिलित हुए। देवगिरी प्रांत–छत्रपति संभाजीनगर के आडगांव में 17 से 27 जून तक मुंबई क्षेत्र का दस दिवसीय पुरोहित प्रशिक्षण वर्ग संपन्न हुआ। चारों प्रांतों से 20 शिक्षार्थी और 3 आचार्य सम्मिलित हुए।

03. मुंबई क्षेत्र की योजना बैठक 15 जून को संपन्न हुई।

04. देवगिरि प्रांत : 13 अप्रैल को नांदेड जिले के पानशेवडी तांडा में एक विशाल तांडा परिषद संपन्न हुई, जिसमें जिले के कुल 200 तांडों से 2,000 तांडा नाईक, कारभारी और पुजारी बंधु/भगिनी सम्मिलित हुए। बंजारा धर्मगुरू महंत बाबूसिंह महाराज की प्रमुख उपस्थिति एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। धर्मांतरण मुक्त तांडा, लवजिहाद मुक्त तांडा, गौ युक्त घर ऐसे तीन महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए।

05. दक्षिण कर्नाटक, उत्तर कर्नाटक, देवगिरि, अरुणाचल प्रदेश, उत्तर पूर्व प्रांत, इन्द्रप्रस्थ प्रांतों के 11 स्थानों में मंदिरों की बैठक आयोजित हुई, जिसमें 89 मंदिरों के 280 न्यासीगण उपस्थित रहे।

संस्कृत

- अशोक सिंहल वैदिक शोध संस्थान की प्रबन्ध समिति एवं विद्वत्परिषद की संयुक्त बैठकें आयोजित की गई।
- परिषद द्वारा संचालित वेद विद्यालयों के आचार्यों के साथ विभिन्न विषयों पर चिन्तन हुआ, जिसमें वेद विद्यालयों के प्राचार्य, आचार्य एवं प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।
- अखिल भारतीय संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण वर्ग 3 जून से 12 जून, 2025 तक आयोजित किया गया। इसमें 17 प्रांतों के 49 स्थानों से स्नातक तृतीय वर्ष व उसके ऊपर के 64 प्रतिभागी समुपस्थित रहे, जिनमें 26 बहनें थीं। प्रतिभागियों में शिक्षक, शास्त्री, स्नातक, शिक्षाशास्त्री, आचार्य, स्नातकोत्तर व विद्यावारिधि सम्मिलित हुए।
- 08 जून को भारत संस्कृत परिषद एवं पर्वतीय लोकविकास समिति द्वारा राष्ट्रीय पर्यावरण गोष्ठी का आयोजन किया गया।

सेवा पुंज

सेवा

01. वर्तमान में 46 प्रान्तों के 451 जिलों में 6,399 सेवाकार्य संचालित हैं। शिक्षा–3,526, स्वास्थ्य–1,137, सामाजिक–446, स्वाबलम्बन–1290 | 943 संस्कारशालाएँ हैं। गत एक वर्ष की कालावधि में सेवा उपक्रम 4,833 किए गए, जिनमें 4,53,127 सेवार्थियों से सम्पर्क किया गया।

02. संस्कारशाला की आचार्याओं को प्रशिक्षण देने के लिए विविध भाषा–भाषी प्रशिक्षक तैयार करने के उद्देश्य से 14–15–16 फरवरी 2025 को दिल्ली में एक प्रशिक्षक वर्ग आयोजित किया गया, जिसमें 7 भाषाओं के 41 प्रशिक्षक सहभागी हुए।

03. देश भर में सेवा कार्यों के संचालन में विविध प्रान्तों के सेवा न्यासों के न्यासीगण का संगम 22–23 फरवरी 2025 को मुम्बई में आयोजित किया गया, जिसमें 75 न्यासों के 135 प्रतिभागियों ने सहभाग किया।

04. कर्णावती क्षेत्र में विगत तीन वर्ष से एक ही दिन में अनेक सेवा बस्तियों में चिकित्सा जांच शिविरों के आयोजन की एक सेवा प्रारम्भ की गई है। इस वर्ष डॉ. अम्बेडकर जी की जयन्ती के अवसर पर सम्पूर्ण कर्णावती क्षेत्र के 46 जिलों के विविध स्थानों में 576 समरसता यात्रा चिकित्सा शिविर आयोजित किए गए, जिनमें 2,640 चिकित्सकों एवं 2,700 से अधिक कार्यकर्ता ने सेवाएँ प्रदान कीं। इस सम्पूर्ण आयोजन में 86,000 से अधिक समाजबान्धवों को चिकित्सकीय जाँच का लाभ मिला है। इसी क्रम में 8 जून को मध्यभारत प्रान्त के भोपाल महानगर की 55 सेवा बस्तियों में चिकित्सा जांच शिविर आयोजित किए गए, जिनमें 6,273 लाभार्थियों को स्वास्थ्य जाँच का लाभ मिला तथा 105 चिकित्सकगण, 360 कार्यकर्तागण एवं 55 आचार्या बहनें सेवारत रहे।

05. बालक वृन्द के बहुआयामी विकास के उद्देश्य से ग्रीष्मकालीन अवकाश में विविध प्रकार के कला कौशल के प्रशिक्षण तथा जीवन निर्माण की दिशा में प्रबोधन की दृष्टि से ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित किए गए, वे स्थान हैं–कारुण्य सिन्धु आश्रम, भाग्यनगर, उत्तर आन्ध्र का तिरुपति तथा दक्षिण आन्ध्र का गुन्तकल।

06. इस वर्ष अखिल भारतीय सेवा बैठक का आयोजन भाग्यनगर में दिनांक 20, 21 एवं 22 जून को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। बैठक में केन्द्रीय संयुक्त महामन्त्री माननीय कोटेश्वर शर्मा जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस बैठक में 113 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। बैठक में 36 प्रान्तों का प्रतिनिधित्व रहा।

धर्मप्रसार

संस्कार दीक्षा कार्यक्रम – विगत पांच माह में 39 प्रांतों में संस्कार दीक्षा के कार्यक्रमों के माध्यम से 10,861 बन्धु–भगिनी का अपने स्वधर्म में परावर्तन हुआ। इन कार्यक्रमों में तेलंगाना, देवगिरि और मेरठ प्रांत में होने के साथ–साथ 1,000 से अधिक संख्या में

परावर्तन द. आन्ध्र, चित्तौड़, काशी, छत्तीसगढ़ और बांसवाड़ा परियोजना के द्वारा सम्पन्न हुआ है। ब्यावर परियोजना के संयोजना में दाह संस्कार पद्धति के माध्यम से परावर्तन कार्य (मुसलमान से हिन्दू) किया जा रहा है। लगभग 400 वर्षों के बाद यह संभव हो पाया। उपरोक्त परावर्तन कार्य में सिन्धी समाज, सिख समाज, राजपूत समाज जो कभी मुसलमान या ईसाई बन गये थे, उन सभी को हिन्दू धर्म में परावर्तित किया गया है। बजरंग दल कार्यकर्ताओं के प्रयास से 1,645 सदस्यों का हिन्दू धर्म में परावर्तन किया गया। इसके अतिरिक्त धर्मप्रसार एवं बजरंग दल के संयुक्त प्रयास से 6,000 हिन्दू कन्याओं का उद्धार किया गया और धर्मान्तरण होने से 70,000 लोगों को बचाया गया है।

परावर्तन के बाद – धर्मप्रसार विभाग के माध्यम से जो बन्धु/भगिनी अन्य धर्मों से हिन्दू धर्म को अपनाते हैं, उन सभी को हिन्दू समाज में समरस होने के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रम किये जाते हैं। उसमें हैं–तीर्थ यात्रा दर्शन, सामूहिक भोजन और संतों द्वारा आशीर्वाद प्रदान। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत राजस्थान में संचालित बांसवाड़ा परियोजना के संयोजना में 2,000 जनजाति बन्धुओं को 35 बसों से 15 दिनों तक तीर्थ यात्रा करवायी गयी। यह यात्रा ओंकारेश्वर, महाकालेश्वर, बागेश्वरधाम, चित्रकूट, प्रयागराज, काशी, श्री अयोध्याजी, हरिद्वार, ऋषिकेश, मथुरा, वृन्दावन, मेंहदीपुर बालाजी, तीर्थराज पुष्कर, सांवरिया सेठ इत्यादि अनेक प्रमुख तीर्थ स्थानों का भ्रमण कराते हुए सम्पन्न हुई। विशेष विषय यह है कि प्रत्येक व्यक्ति ने अपने स्वरोजगार से तीर्थ यात्रा के लिए रूपये–5,000 का शुल्क वहन किया है। उड़ीसा में श्रीजगन्नाथ धाम (पुरी) में दक्षिण बंग, उत्तर बंग, पश्चिम उड़ीसा एवं पूर्व उड़ीसा से जितने भी बन्धुओं ने विगत वर्ष हिन्दू धर्म को अपनाया है, उन सभी व्यक्तियों को पुरी दर्शन हेतु लाया गया और संतों के आशीर्वाद और महाप्रभु श्री जगन्नाथ का महाप्रसाद सेवन करवाया गया। दक्षिण गुजरात प्रांत में जनजाति क्षेत्रों के बन्धुओं की आस्था ढ़ृहता प्रदान करने के लिए उनकी कुलदेवी देवमुगरा माता का दर्शन हेतु लम्बी पैदल यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा में 4,000 से अधिक जनजाति श्रद्धालु सम्मिलित हुए।

पुजारी प्रशिक्षण – जनजाति क्षेत्रों में परम्परा को बनाये रखने के लिए धर्मप्रसार की और से गाँव–गाँव में झाड़–फूक करने वाले और ग्रामीण पुजारियों का एक अभ्यास वर्ग का आयोजन किया गया। ब्यावर परियोजना के अन्तर्गत 80 गाँवों के 135 भोपा, कोतवाल एवं पुजारियों का दो दिवसीय अभ्यास वर्ग सम्पन्न हुआ। बांसवाड़ा परियोजना के अन्तर्गत गाँव–गाँव में चलने वाली 345 भजन मंडलियों के प्रमुख, कोतवाल एवं ग्राम पुजारियों का भी दो दिवसीय अभ्यास वर्ग सम्पन्न हुआ। देवगिरि प्रांत में बंजारा समाज की परम्परागत संस्कृति को सुरक्षा प्रदान करने के लिए ग्राम पुजारियों का एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में 340 तांडा (गाँव) से 750 महिला 680 पुरुष के साथ 4,000 से अधिक बंजारा बन्धु/भगिनी सम्मिलित हुए। दक्षिण कर्नाटक के मैसूर ग्रामीण जिले में ग्राम पुजारियों का एक अभ्यास वर्ग का आयोजन किया गया, जिसमें 140 पुजारियों ने भाग लिया।

मंदिर योजना – जनजाति क्षेत्र के बंधु आकृति के बदले प्रकृति की पूजा करते आ रहे हैं। इनकी सरलता को ध्यान में रखते हुए ईसाईयों ने उनको चर्च में बुलाकर धार्मिक कार्य पूरा करने के साथ–साथ सहजता से धर्मान्तरण भी कर देते हैं। इस समस्या का समाधान करने हेतु धर्मप्रसार विभाग की ओर से जनजाति क्षेत्रों में अब तक 750 मंदिरों का निर्माण किया गया है। वर्तमान में बांसवाड़ा परियोजना के अन्तर्गत कुशलगढ़, प्रतापगढ़, उदयपुर, बांसवाड़ा जिलों में 585 मंदिर, दक्षिण गुजरात के डांग, तापी जिले में 55 मंदिर, काशी प्रांत के जनजाति क्षेत्रों में 35 मंदिर, देवगिरि प्रांत में 38 मंदिर, दक्षिण कर्नाटक प्रांत में 22 मंदिर, ब्यावर परियोजना के अन्तर्गत 45 मंदिर एवं उड़ीसा पश्चिम प्रांत के ग्राम मंगल परियोजना के अन्तर्गत 7 मंदिरों का निर्माण किया गया है। इन सभी मंदिरों के माध्यम से अवैध धर्मान्तरण को रोकना सुविधाजनक होता है। धर्मप्रसार की ओर से संचालित परियोजना के माध्यम से प्रत्येक परियोजना में वार्षिक उत्सव का आयोजन किया जाता है। इसी वर्ष ब्यावर परियोजना ने 5 जून 2025 को हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की जन्म जयंति के अवसर पर वार्षिक उत्सव मनाया गया। इस उत्सव में 140 गाँवों से 5,000 से अधिक बन्धु/भगिनी उपस्थित थे। 16 मार्च 2025 को उड़ीसा के राजगांगपुर में ग्राम मंगल परियोजना का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में लगभग 2,000 से अधिक बन्धु/भगिनी सहभागी बने। उड़ीसा पश्चिम प्रांत में ग्राम मंगल परियोजना के माध्यम से 14 विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है।

सामूहिक विवाह – कर्नाटक दक्षिण प्रांत के मैसूर ग्रामीण जिले में गत 23 अप्रैल को सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें 34 जोड़ी वर–वधु सम्मिलित हुए। उपरोक्त समस्त कार्य निमित्त वर्तमान में धर्मप्रसार विभाग में 107 पूर्णकालिक एवं 375 धर्मरक्षक कार्यरत हैं।

❖	मतान्तरण से बचाया	स्थान – 587	कुल परिवार	–	8,535	कुल सदस्य	–	33,136
❖	हिन्दू कन्या रक्षा	स्थान – 354				कुल सदस्य	–	769
❖	हिन्दू घर में बहु	स्थान – 113				कुल सदस्य	–	171
❖	परावर्तन ईसाई	स्थान – 251	कुल ईसाई परिवार	–	1,917	कुल ईसाई सदस्य	–	6,944
❖	परावर्तन मुस्लिम	स्थान – 71	कुल मुस्लिम परिवार	–	206	कुल मुस्लिम सदस्य	–	983

वनवासी रक्षा परिवार फाउण्डेशन

(क) कार्य का व्याप –

❖ कार्ययुक्त प्रांत संख्या 16 — आगामी लक्ष्य–4 जयपुर, छत्तीसगढ, उत्तराखण्ड, दक्षिण असम।

❖ कार्ययुक्त जिले – 72 — आगामी लक्ष्य – 17

❖ कार्ययुक्त प्रखण्ड – 62 आगामी लक्ष्य – 17
❖ कार्ययुक्त नगर – 68, आगामी लक्ष्य – 20

(ख) संख्यात्मक आंकड़े –

❖ वर्तमान केन्द्र संख्या – 1,249, आगामी केन्द्र विस्तार का लक्ष्य – 885
❖ वर्तमान छात्र संख्या – 27,124 अभिभावक संख्या – 20,047
❖ संपर्कित अन्य परिवार संख्या – 4,071
❖ संपर्कित अन्य छात्र संख्या – 3,669
❖ वर्तमान समिति सदस्य संख्या – 4,592

(ग) श्रीरामनवमी महोत्सव आयोजन में सहभागिता

❖ स्थान – 643 उपस्थित कुल छात्र – 12,645
❖ अभिभावक एवं समाज के अन्य की कुल उपस्थिति – 5,126

(घ) अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

❖ कुल स्थान–807, उपस्थित छात्र–14,543, अभिभावक–5,956, उपस्थित समिति सदस्य एवं अन्य–2,366

(ङ.) आवासीय छात्रावास – ओडिसा प्रांत के अन्तर्गत सुन्दरगढ़ जिला में 3 औपचारिक विद्यालय भवन बनाए गए हैं। इनमें सुंदरगढ़ जिला अन्तर्गत 'जडा' में छात्रावास है, जहाँ 48 छात्र रहते हैं। असम के उदालगुड़ी में एक छात्रावास निर्माणाधीन है।

सामाजिक समरसता

1) प्रान्त 40. कार्य टोली..सदस्य संख्या – 218 2) जिला समरसता प्रमुख – 466
3) चयनित जिला – 171 4) जिला टोली – 224
5) डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर जयंती स्थान – 1113, उपस्थिति – 43,823
6) संत रविदास जयंती स्थान – 650 उपस्थिति – 4,46,602
7) महर्षि वाल्मीकि जयंती स्थान – 698, उपस्थिति – 28,814
8) समरसता गोष्ठी/सम्मेलन, स्थान – 530, उपस्थिति – 17,540
9) छात्रावास संपर्क – 180 10) हिन्दू परिवार मित्र – 2,790
11) समरसता यज्ञ स्थान – 77 उपस्थिति – 4,864
12) प्रान्त समरसता यात्रा 22 प्रान्त। एक विभाग के सभी जिले, प्रखंडों में संत 900, सहभागिता 2 लाख, समरसता पत्रक वितरण, 1,200 बड़ी–छोटी सभा, 95 जिला, 330 प्रखंड संपर्क। यात्रा का प्रारंभ डॉ. अम्बेडकर जी की जन्मभूमि महू से 24 नवंबर को हुआ।
13) 150 धर्मान्तरित लोगों की घरवापसी हुई।

गोवंश रक्षण एवं संवर्द्धन परिषद

❖ **संगठनात्मक**

प्रान्त ट्रस्ट रजि.	19	प्रान्त टोली	30	क्षेत्र गोरक्षा प्रमुख	10	प्रान्त गोरक्षा प्रमुख	42
कार्ययुक्त विभाग	148	कार्ययुक्त जिला	575	कार्ययुक्त प्रखण्ड	2,206	कार्ययुक्त ग्राम	34,763
अपनी गौशालाएं	110	कुल गौशालाएं	14,396	संपर्कित गौशाला	4,311	गोवंश मुक्त	45,737
घरेलु गोउत्पाद प्रशिक्षण केन्द्र	507	घरेलू गोउत्पाद बिक्री केन्द्र	619	पंचगव्य औषधि निर्माण केन्द्र	288	गोवंश आधारित खेती करने वाले किसान	20,415
गोसम्पदा सदस्य	5,000	पंचगव्य बिक्री केन्द्र	288	कृषि प्रशिक्षण केन्द्र	84	पंचगव्य प्रशिक्षण केन्द्र	135
मकर संक्रान्ति	1,145	महाशिवरात्रि	8,367	नस्ल सुधार केन्द्र	110	गोवंश आधारित गांव	16,571
वैद्यों की सूची	6,962						

❖ **विशेष कार्यक्रम**

❖ 20 फरवरी 2025 को प्रयागराज महाकुम्भ में तमिलनाडु के पूज्य संत थिरुप्पदा स्वामीकल थिरुवन्नमलाई की अध्यक्षता में 4,000 गोभक्तों की उपस्थिति में सभी प्रान्तों से आये हुए 51 बन्धु/भगिनी का विशेष सम्मान किया गया, जो कृषि, पंचगव्य, घरेलू उत्पाद में विशेष भूमिका निभा रहे हैं। सम्मेलन में पाँच राज्यों के गोसेवा आयोग के अध्यक्ष उपस्थित रहे।

❖ केन्द्रीय टोली की बैठक 9–10 अप्रैल, 2025 को पटना (बिहार) में सम्पन्न हुई। 9 अप्रैल, 2025 को स्थानीय गोभक्त एवं गोप्रेमी नागरिकों की गोष्ठी का आयोजन हुआ।

❖ देशभर के लगभग 639 जिला मुख्यालयों पर जिलाधिकारी महोदय को बकरीद (7 जून, 2025) से पूर्व गोकशी रोकने के लिए ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

- अवध प्रांत में 1 जून 2025 को गोभक्त महिला सम्मेलन महाराजा सुहेलदेव स्वशासी राजकीय मेडिकल कालेज सभागार, बहराइच में सम्पन्न हुआ, जिसमें 492 गोभक्त महिला, 98 गोभक्त पुरुष उपस्थित रहे।
- 12 जनवरी, 2025 से गो–विज्ञान अनुसंधान केन्द्र देवलापार में महाराष्ट्र पशु एवं मत्स्य विश्वविद्यालय नागपुर के सहयोग से नस्ल सुधार का कार्य प्रारम्भ किया गया, जिससे आगामी 3 वर्षों में किसानों को अच्छी नस्ल की दुधारू गोवंश का वितरण किया जा सके।
- गत छः मास में 15 राज्यों से 190 बंधु/भगिनी व 12 बन्धु नेपाल से गो–अनुसंधान केन्द्र देवलापार में 5 दिवसीय प्रशिक्षण हेतु आए।
- गत छः मास में गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र देवलापार द्वारा 18 किसानों को 40 गोवंश का वितरण किया गया।
- 22 मई, 2025 को गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र देवलापार में 2,000 गोवंश के लिए स्व. मोरोपंत पिंगले गोसेवा धाम भवन का वास्तु पूजन एवं शोभायात्रा निकालकर गोमाता का गृह प्रवेश माननीय भैया जी जोशी द्वारा किया गया।
- देश भर में आयाम की प्रेरणा से 22,723 व्यक्तियों द्वारा गोपालन एवं 13,703 लोगों द्वारा गोपूजन किया गया।
- **प्रचार – प्रसार विभाग**

1. प्रांतों में प्रचार – प्रसार प्रमुख तय हैं – 44 प्रांत
2. जिलों में टोलियाँ – कुछ प्रांतों में जिला स्तर की टोली पूर्ण हैं।
3. सोशल मीडिया

A. ट्विटर :-

Sl. No.	Handel	Followers 2024	2025	Impression 2024	2025
1.	VHP Digital	399K	407K	1.8M	1.6M
	Bajrang Dal Org	90.6K-	94.4K	1.2M	401.3K
	eHindu Vishwa	23.5K	23.8K		
	VSK Samvad Kendra	3.3K-	3.4K		
	VHP Social Media	5K	5.3K		
	Sewa VHP	939	956		
	Durga Vahini Org	4.7K	5K		

B. फ़ेसबुक पेज:-

Sl. No.	Handel	Followers 2024	2025	Like 2024	2025	Reach 2024	2025
1.	VHP Digital	161K	164K	95K	98K	4.2M	
2	Bajrang Dal Org	90K	91K	70K	71K	615.8K	911.1K
3	eHindu Vishwa	8.2	8.4k	4.2	4.4K	77.9K	76.6K
4	VSK Samvad Kendra	-	1.3K	1.1K	1.1K	**23.8K**	
5	VHP Social Media	1.1	1.3K	971	1.1K	26.8K	
7	Durga Vahini Org	7.9K	8.7K	8.1K		15.9K	15.9K

C. WA / Telegram Channel :-

Platform	Channel	Followers	Subscribers
WA चैनल	VHP Digital	2.5K	
	Bajrang Dal Org	45	
	Durga Vahini Org	45	
टेलीग्राम चैनल	VHP digital	-	4.1K
	Bajrangdal Org	-	2.1K

D. यूट्यूब:-

VHP Digital : Subscriber - 2024 - 16.3K, 2025 16.9K

E. इंस्टाग्राम :

Sl.No.	Handel	Followers		Reach		View	
		2024	**2025**	**2024**	**2025**	**2024**	**2025**
1.	Digital VHP	200K	205K	1.5 M	2.1M	6.3 M	6M
2	eHindu Vishwa	122K	120K	100.5K	121K	487.9K	334K
3	Bajrangdal_Org	38.8k	42.4K	184K	23.8K	206K	96.7K
4	VHP Social Media	54.6K	60.8K	186.5k	149.6K	379.3K	363.7K
5	VSK Samvad Kendra	4.7	6,496	13.3K	282.3K	537.3K	
6	Durga Vahini Org	4.5	5,555	18.4K	9.6K	48.5K	25.8K

5. पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशन :
   हिन्दी–6, मलयालम–1, तेलुगू–2, कन्नड़–1, तमिल–1, मराठी–1, बांग्ला–1, असमिया–1, गुजराती–1
6. प्रचार – प्रसार विभाग द्वारा गत छः माह में किये गए कार्य :–

- ✓ 'आज तक' ने पादरी को पुजारी लिखा इसके विरोध में प्रचार विभाग ने कार्य किया।
- ✓ संदेशखाली के विषय पर सक्रिय रूप से कार्य किया, रामनवमी पर बंगाल के मुर्शिदाबाद में हिंसा पर प्रचार विभाग की पहल पर खबर उठी।
- ✓ ToI द्वारा हजारीबाग में भाजपा के विरूद्ध बजरंग दल और हिंदू संगठन के प्रत्याशी खड़े होने की खबर प्रकाशित हुई, जिसके बाद प्रचार विभाग के प्रयास से खबर ठीक हुई, Ahp और राष्ट्रीय बजरंग दल को बजरंग दल बताया गया था।
- ✓ उल्लू ऐप पर आने वाले कंटेंट बंद कराया और केस दर्ज हुआ।
- ✓ प्रचार – प्रसार विभाग अखिल भारतीय बैठक भाग्यनगर ने संपन्न हुई, जिसमें लगभग 32 प्रांत से कार्यकर्ता उपस्थित रहे।
- ✓ कुंभ में पूर्ण समय प्रचार विभाग की टोली सक्रिय रही और प्रेस वार्ता, वीडियो शूट, इंटरव्यू आदि किये गए, लेख प्रकाशित कराए गए।
- ✓ समाज में कंटेंट भेजने के लिए "विचार – प्रवाह" नामक ग्रुप संवाद केंद्र द्वारा संचालित किया जा रहा है, जिसमें तीन स्तर पर यह ग्रुप संचालित है – केंद्र, प्रांत, जिला
- ✓ मुंबई आजाद मैदान में फिलिस्तीन के समर्थन में रैली के विरोध हेतु केन्द्रीय प्रचार टोली ने ट्विट किया, जिसके बाद पुलिस ने रैली पर रोक लगा दी।
- ✓ जयपुर में धर्मांतरण के विषय पर प्रचार विभाग ने मीडिया के माध्यम से विषय को प्रांत और केंद्रीय स्तर के चैनलों पर उठाने के साथ अनेकों टीवी डिबेट भी कराने में भूमिका निभाई।

7. कथन प्रवाह तंत्र : संगठनात्मक – प्रचार – प्रसार विभाग के समूह।

केंद्रीय, क्षेत्र, प्रांत, संपादक व प्रबंधक, प्रांत सोशल मीडिया प्रमुख केंद्रीय समूह।
समाज व इंफ्लूंसर के लिए – विश्व संवाद केंद्र समूह और चैनल, इंफ्लूसर ग्रुप व यूट्यूबर्स ग्रुप
विचार – प्रवाह तंत्र –
विचार – प्रवाह केंद्र द्वारा संचालित तीन स्तरीय एक दिशा संचार प्रणाली है
विचार प्रवाह – केंद्र (सक्रिय), विचार प्रवाह – प्रांत (सक्रिय), विचार प्रवाह – जिला (कार्य जारी है)
वर्तमान स्थिति – सभी प्रांतों के ग्रुप बनाने हेतु सूची निर्माण का कार्य पूर्ण हो चुका है, वर्तमान में जिले के ग्रुप बनने की प्रकिया जारी है, जिसमें 31 प्रांत के सभी 756 जिलों में से 708 जिलों के ग्रुप बनाये जा चुके हैं।

बैठक –

१. केंद्रीय टोली नियमित बैठक प्रत्येक दिन प्रातः 8 बजे
२. अखिल भारतीय बैठक – प्रांत प्रचार प्रसार प्रमुख (ऑनलाइन) प्रत्येक माह के पहले शनिवार
प्रांत सोशल मीडिया प्रमुख (ऑनलाइन) प्रत्येक माह दूसरे शनिवार

8. केंद्रीय प्रचार प्रसार विभाग द्वारा जुलाई से जनवरी माह तक – प्रेस कांफ्रेंस–5, प्रेस विज्ञप्ति–20, लिखित संदेश–1, वीडियो संदेश–11, लाइव कार्यक्रम–2 (बजरंग दल शौर्य कुंभ मालवा प्रांत, विजयवाड़ा मंदिर अभियान)
9. प्रांत बैठक – महाकौशल, हरियाणा, मध्यभारत, गोरक्ष, जोधपुर, दक्षिण आन्ध्र, दक्षिण तमिलनाडु में पूर्ण हुई है।
10. **Website (Vhp.org) Visitors / Views (January 2025 to June) :**
Total State – 34, Cities – 1,480, Total Views – 2,81,210, Total Visitors – 1,04,241

विशेष सम्पर्क विभाग

(क) संगठन

43 प्रांत प्रमुख, 31 प्रांत सह प्रमुख, 38 प्रांतों में पालक अधिकारी, 31 प्रांतों में प्रांत टोली। 102 विभाग केन्द्र, 42 नगर निगम प्रमुख, 430 जिला प्रमुख।

(ख) प्रमुख संवाद कार्यक्रम

विशिष्ट नागरिक गोष्ठियाँ – कोलकाता (दक्षिण बंग), रीवा व सागर (महाकौशल), हुबली (उत्तर कर्नाटक), मैसूर व बंगलुरु (दक्षिण कर्नाटक), गोरखपुर (गोरक्ष), तिरुपति, नेल्लूर व नंदियाल (दक्षिण आन्ध्र), नांदेड़ (देवगिरि) एवं अलवर (जयपुर) में सम्पन्न हुई। संवाद कार्यक्रम 19 प्रान्तों में हुए, जिसमें Phd, IITs, राज्य, केन्द्रीय, निजी विश्वविद्यालय, निजी संस्थान के डाक्टर, CA, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी, अवकाश प्राप्त न्यायाधीश, प्रोफेसर्स, बड़े उद्योगपति, बड़े व्यापारी और बड़े अधिवक्ता सहभागी हुए।

(ग) देश में विभिन्न श्रेणियों की अब तक बनी सूची में विशिष्ट व्यक्तियों की संख्या – जनप्रतिनिधि और राजनेता–2,519, प्रशासनिक अधिकारी–1,253, उद्योगपति–1,240, व्यापारी–1,869, शैक्षिक क्षेत्र–1,620, डाक्टर–1,086, CA-905, विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्राप्त व्यक्ति–567, लेखक, कवि, विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण व्यक्तित्व–501, सामाजिक और धार्मिक संगठनों के प्रमुख–390, अन्य–1,227, महायोग–13,177

(घ) क्षेत्रशः कार्यशाला – लखनऊ, भाग्यनगर, बंगलुरू, भोपाल एवं मुम्बई क्षेत्रों में सम्पन्न हुई।

(च) विधायक सम्पर्क दक्षिण बिहार में हुआ है। झारखण्ड, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान, तेलंगाना, महाराष्ट्र में इस वर्ष करने की योजना बन रही है।

(छ) प्रान्तों की बैठकों का क्रम क्रमशः व्यवस्थित हो रहा है।

विशेष वृत्त
देवगिरि

(1) देवगिरी प्रांत के नंदुरबार जिला स्थित प्रकाशा ग्राम मे तापीमाता का जन्मोत्सव आषाढ शुक्ल सप्तमी 2 जुलाई को सभी ग्रामवासी को एकत्रित कर और सभी के सहयोग से विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं द्वारा संपन्न हुआ। संपुर्ण जिला से 108 युवक–युवतिओं को प्रशिक्षित कर यह आरती संपन्न हुई। नयी पीढ़ी को महान प्राचीन संस्कृति का परिचय कराते हुए समरसता, स्वच्छता, ग्राम विकास एवं धर्मजागरण का संकल्प लेकर यह संकल्पना आदर्श संघटनात्मक कार्य कर रही है। आदिवासी क्षेत्र में समरसता का परिचय देते हुये तापीमाता का अभिषेक एवं पूजा विधि हिंदू समाज के विविध जाति के प्रतिनिधियों द्वारा किया गया। गत वर्ष से इन आरती के चलते संपूर्ण समाज में बंधुत्व का भाव निर्माण हो रहा है।

(2) विश्व हिंदू परिषद मंदिर अर्चक पुरोहित आयाम देवगिरी प्रांत की ओर से भारत में पहली बार जून महीने में 10 दिन का निवासी और निःशुल्क पुजारी प्रशिक्षण शिविर संभाजीनगर में संपन्न हुआ। इस शिविर में महाराष्ट्र के 10 जिलों से 22 प्रशिक्षार्थी उपस्थित थे। इस शिविर में 10 जातियों के लोगों को पुजारी प्रशिक्षण दिया गया। मीडिया सहित सभी लोगों ने इस कार्य को सराहा।

(3) गोर बंजारा समाज की परंपरा एवं संस्कृति के संवर्धन तथा बंजारा समाज में हो रहे धर्मांतरण के विरोध में, जन जागृति करने हेतु विश्व हिंदू परिषद धर्मप्रसार विभाग, देवगिरी प्रांत के द्वारा नांदेड़ जिले के कंधार तहसील के ढ़ाकूनाईक टांडे के मिटूभूखिया गढ़ पर 'नायक कारभारी पुजारी परिषद' कार्यक्रम का आयोजन 13 अप्रैल 2025 को किया गया। इस परिषद के कार्यक्रम में बंजारा समाज के प्रमुख धर्मगुरु पोहरादेवी के महंत आमदार बाबूसिंह जी महाराज इनकी प्रमुख उपस्थिति और आशीर्वाद प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन और प्रस्तावना भगवान जी राठौड़ ने और कार्यक्रम का सूत्र संचालन विजय जी पवार ने किया। इस परिषद में संपूर्ण जिले के 340 टांडे से 750 महिलाएँ और 680 नायक कारभारी पुजारी तथा इनके साथ 4,537 समाज बंधु बांधव उपस्थित रहे। इस परिषद के सम्मेलन में गौ माता संगोपन व रक्षण तथा लव जिहाद और बंजारा समाज में हो रहे धर्मांतरण का विरोध इसके संदर्भ में उपरोक्त 3 प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए। इस परिषद के लिए स्थानिक बंजारा समाज के युवाओं ने स्वप्रेरणा से समय देते हुए परिषद सफल की। उपस्थिति के कारण सभी कार्यकर्ताओं का उत्साह अपनी चरम सीमा पर था। धर्म, संस्कृति रक्षण के राष्ट्र कार्य में इस परिषद की यशस्विता से सभी कार्यकर्ता आनंद और प्रसन्नता अनुभव कर रहे थे।

(4) देवगिरी प्रांत धर्मप्रसार विभाग घरवापसी 02 मार्च 2025 के कार्यक्रम का वृत्त ....

❖ देवगिरी प्रांत में नंदुरबार जिले के अक्कलकुवा तहसील/प्रखंड में 02 मार्च 2025 के दिन घरवापसी कार्यक्रम संपन्न हुआ।

❖ कुल घरवापसी संख्या – अक्कलकुवा, मोलगी, धडगांव, तलोदा, नवापुर तहसील में चयनित 40 ग्राम में से कुल 207 परिवार के 510 सदस्य घरवापसी, हवन–यज्ञ के लिए उपस्थित थे।

❖ इसी 207 परिवार के बच्चे और माता–पिता की संख्या जिन्होंने घरवापसी की, फॉर्म भरवाकर सहमति जताई, लेकिन उपस्थित नहीं थे, वह कुल संख्या – 389 रही।

❖ हर परिवार को उनकी स्वप्रेरणा से उनका सहमति फॉर्म भरवाकर, जनजाति संस्कृति दीक्षा हेतु हवन कार्यक्रम के लिए लाया गया था।

❖ घरवापसी करने वाले हर परिवार को उसी गाँव के हिंदु परिवार और उसी गाँव के ग्राम पुजारी, संतों से जोड़कर ही पुनर्वसन का प्रयास किया गया है।

❖ गत दो मास से अधिक समय इस कार्यक्रम की तैयारी चल रही थी। सभी धर्मरक्षक और स्थानिक कार्यकर्ताओं ने अपने–अपने क्षेत्र में प्रवास, भेंट, बैठक करने से कार्यक्रम सफल हुआ।

❖ यह 5 तहसील/प्रखंड का कार्यक्रम था और इन प्रखंड में कार्यरत कुल – 9 धर्मरक्षक और 20 से अधिक स्थानिक कार्यकर्ताओं ने अपना समय निकालकर यह कार्यक्रम यशस्वी किया।

❖ घरवापसी कर लौटकर वापस आये हर परिवार को आदिवासी जनजाति की कुलदेवी माता याहामोगी की धातु की 9 इंच ऊंची 950 ग्राम वजन की मूर्ती पूजनीय संतों के हाथों से भेंट दी ताकि उनकी श्रद्धा बनी रहे।

❖ प्रांत टोली के सदस्य एड. श्री जोगेंद्र सिंह चव्हाण संभाजीनगर के मार्गदर्शन में घर वापसी यज्ञ–हवन आर्य समाज पद्धति से सम्पन्न हुआ।

❖ 11 हवन कुंड के साथ तीन घंटे से अधिक समय मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ का कार्यक्रम चला।

❖ उसी दिन उसी अक्कलकुवा प्रखंड में संत यात्रा, शोभायात्रा जनजाति के प्रमुख पूजनीय संतों की उपस्थिति में अच्छी तरह से बड़ी संख्या में संपन्न हुई, जिसकी शुरुआत में हमारे धर्मप्रसार के अखिल भारतीय प्रमुख एवं केंद्रीय मंत्री माननीय सुधांशु जी पटनायक ने की।

❖ संत यात्रा और घरवापसी कार्यक्रम के लिए जनजाति संत समूचे भातीजी संप्रदाय के प्रमुख आचार्य पूजनीय श्री गोविंददास महाराज, भातीजी संप्रदाय उपाचार्य श्री अजब सिंह महाराज, प्रवक्ता मा. प्रतापदादा वसावे तथा सूरत गुजरात के धर्मप्रसार प्रांत टीम के 4 प्रमुख कार्यकर्ता और विश्व हिंदू परिषद के विभाग, जिले के कई प्रमुख कार्यकर्ता पदाधिकारियों की प्रमुख उपस्थिति थी।

❖ डाब ग्राम के स्थानिक ग्राम प्रशासन के प्रमुख, डाब का कुलदेवी याहामोगी मंदिर, जिसके प्रांगण में ये कार्यक्रम हुआ, उसके पुजारी, ग्रामवासी और पुलिस प्रशासन का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ, जिसके कारण कार्यक्रम अच्छी तरह से संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम प्रसिद्धी माध्यमों से अलग रखा गया।

❖ अखिल भारतीय धर्मप्रसार के प्रमुख एवं प्रांत, विभाग, जिला के सभी प्रमुखों की उपस्थिति के कारण संपन्न हुए इस कार्यक्रम का अनुभव हम सभी प्रमुख कार्यकर्ता और धर्मरक्षकों के लिए प्रेरणादायी रहा।

हिमाचल प्रदेश

❖ हमीरपुर जिले के सुजानपुर प्रखण्ड में मुस्लिम समाज द्वारा सार्वजनिक पार्क में महाराणा प्रताप की प्रतिमा स्थापना का विरोध किया गया। इस संदर्भ में उपायुक्त को ज्ञापन देकर सरकारी क्षेत्र में सरकारी अधिकारियों द्वारा कराए जा रहे कार्य पर मुस्लिम समाज के विरोध में संपूर्ण हिन्दू समाज को संगठित करने का कार्य सुजानपुर की विहिप इकाई द्वारा किया गया। 24 घंटे के अंदर संगठित हिन्दू समाज के विरोध, मुस्लिमों का पूर्ण बहिष्कार रंग लाया और एक भव्य महाराणा प्रताप की न केवल प्रतिमा वहाँ स्थापित करवाई गई, बल्कि वह चौक जिसे पहले मस्जिद चौक के नाम से जाना जाता था, उसे अब महाराणा प्रताप चौक के नाम से सुजानपुर शहर में जाना जाता है।

❖ सरकाघाट जिले में म.म. शोभा सिंह ठाकुर के नेतृत्व में किन्नर नीलम (जिसका कि बचपन में ही मुस्लिम समाज ने जबरदस्ती धर्मान्तरण करवा दिया था) धर्मप्रसार आयाम द्वारा विहिप की सरकाघाट इकाई व हमीरपुर जिला के भोरंज प्रखण्ड के

कार्यकर्ताओं के सहायोग से घरवापसी करवाई गयी। इस कार्यक्रम में मंत्रोचारण तथा कानूनी तरीके के साथ शुद्धिकरण का कार्य करवाया गया।

❖ प्राकृतिक आपदा की विषम परिस्थिति में अलग–अलग स्थानों पर विहिप, बजरंग दल के कार्यकर्ता हेल्पलाईन बनाकर स्थान को चिह्नित करते हुए समाज का आर्थिक, शारीरिक, मानसिक सहयोग कर रही है।

दक्षिण कर्नाटक – विशेष वार्ता – 1

युवा प्रेरणा – भारत के निर्माण और सशक्तिकरण की ओर युवा सम्मेलन। हमारी ongoing पहल 'युवा प्रेरणा – भारत के निर्माण और सशक्तिकरण की ओर' के अंतर्गत, एक विचारोत्तेजक युवा सम्मेलन का सफल आयोजन 15 मार्च 2025 को बीएमएस इंजीनियरिंग कॉलेज, बेंगलुरु में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं में उद्देश्य की भावना, सांस्कृतिक गर्व और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को जागृत करना था। इस मंच के माध्यम से हमने भारत की गौरवशाली यात्रा, इसकी सभ्यतागत गहराई, संस्कृतिक समृद्धि, और सनातन धर्म की कालातीत ज्ञान–परंपरा को रेखांकित किया। साथ ही प्राचीन ज्ञान–परंपराओं के आधुनिक समाज में योगदान को भी उजागर किया गया। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया कि आज का युवा भारत को सामाजिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक और आर्थिक रूप से कैसे सशक्त बना सकता है। इस सत्र की विशेषता थी प्रेरणादायक वक्तव्य और एक अनोखा संवाद सत्र – प्रश्नोत्तर संवाद, जिसमें छात्रों और विद्वानों के बीच सीधा संवाद हुआ। यह आदान–प्रदान जिज्ञासा और ज्ञान के बीच सेतु बना और युवाओं को भारत के दार्शनिक मूल्यों और समकालीन उत्तरदायित्वों को गहराई से समझने हेतु प्रेरित किया। इस सम्मेलन ने यह पुनः सिद्ध किया कि राष्ट्र निर्माण की यात्रा प्रेरित युवाओं से ही आरंभ होती है – वे युवा जो अपने संस्कारों और विरासत को समझते हैं और भारत के भविष्य के रक्षक बनने के लिए आगे आते हैं।

विशेष वार्ता – 2

ग्रामीण क्षेत्र में आदिवासी समाजों के लिए एक सामूहिक विवाह समारोह। विश्व हिंदू परिषद – कर्नाटक (धर्म प्रसार विभाग) ने 23 अप्रैल 2025 को मैसूर ग्रामीण क्षेत्र में आदिवासी समाजों के लिए एक सामूहिक विवाह समारोह का सफल आयोजन किया। हमें यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि यह आयोजन भव्य और सफल रहा। कुल 34 जोड़ों ने, जो विभिन्न दूरस्थ आदिवासी बस्तियों से आए थे, वैदिक विधि द्वारा पारंपरिक रीति–रिवाजों के साथ विवाह का पवित्र बंधन स्वीकार किया। मंगलसूत्र से लेकर भोजन तक की सभी व्यवस्थाएँ विश्व हिंदू परिषद की टीम द्वारा पूर्ण श्रद्धा और सत्कार के साथ की गईं, जिससे प्रत्येक परिवार को गरिमा, आनंद और आध्यात्मिक संतोष प्राप्त हो सका। धार्मिक व सामुदायिक नेताओं सहित अनेक शुभेच्छुओं ने इस पावन अवसर की शोभा बढ़ाई और यह दर्शाया कि विहिप कर्नाटक न केवल धार्मिक मूल्यों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है, बल्कि समाज के आधार स्तर तक सेवाभाव से कार्य करने को भी अपना कर्तव्य मानता है।

विदर्भ

प्रान्त नागपुर महानगर में 5 से 15 मई महिने में मातृशक्ति आयाम / दुर्गावाहिनी व सेवा विभाग की तरफ से 10 दिन का सेवा संस्कार शिविर लिया गया।

पूर्व तैयारी :–

✓ नागपुर महानगर में तीनों विभागों के प्रमुख पदाधिकारी की बैठक हुई।
✓ 39 में से 27 प्रखण्डों की निश्चिति हुई।
✓ 27 उपखंड निश्चित किए गए।
✓ संस्कार शिविर लेने वाले कार्यकर्ता निश्चित किए गए।
✓ 30 अप्रैल 2025 को प्रशिक्षण किया गया, जिसमें 39 उपस्थिति रही।
✓ 3 सत्र में प्रशिक्षण किया गया सत्र क्रमांक 1 भूमिका और संस्कार शिविर का महत्व बताया गया।
✓ सत्र 2 कृति सत्र और पाठांतर
✓ सत्र क्रमांक 3 बच्चों के गुणों के (टैलेंट) को बढावा देने के लिए कुछ वस्तुएँ बनाना, गीत गाना, चित्र निकालना इसका प्रशिक्षण दिया।

विशेषता :–

✓ एक साथ 17 स्थानों पर शिविर हुए।
✓ शिविर की शुरूआत उसी बस्ती के समाज के प्रबुद्धजन या प्रमुख व्यक्ति को बुलाकर उनके हाथ से उद्घाटन करवाया गया।
✓ कुल उपस्थिति – प्रतिदिन की उपस्थिति लगभग 750 रहती थी, जिसमें छोटे बच्चे, बच्चियाँ रहती थीं।

अनुवर्तन परिणाम

✓ 14 बस्ती में संस्कार केन्द्र शुरू हो रहे हैं।
✓ पाँच बस्ती में मेहंदी क्लास शुरू होंगे।
✓ एक महिला समुपदेशन केन्द्र (कौन्सिलिंग सेंटर) शुरू होगा।

नागपुर महानगर विशेष वृत्त

❖ **बुद्ध धम्म संस्कार पुस्तिका विमोचन**

बुद्ध पूर्णिमा निमित रिपब्लिक युवा मंच के तत्वाधान में बुद्ध धम्म संस्कार पुस्तिका का विमोचन विहिप केन्द्रीय संगठन महामंत्री श्री मिलिंद परांडे विहिप विदर्भ प्रान्त मंत्री श्री प्रशांत तितरे जी, विदर्भ प्रान्त बजरंग दल सह–संयोजक श्री रिषभ अरखेल जी द्वारा बुद्ध संस्कार पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन अमन मेश्राम व कार्यक्रम का आयोजन ओमकार अंबादे द्वारा किया गया।

✓ 1000 पुस्तिका वितरित की गई।
✓ एक बौद्ध विहार में बुद्धमूर्ति भी प्रदान की गई।
✓ एक समय पूजनीय भंते जी की भी उपस्थिति रही।

जिलाश: अभ्यास वर्ग वृत्त

विदर्भ प्रान्त में जून महीने में 27, 28, 29 को सभी जिलों में त्रिदिवसीय जिला अभ्यास वर्ग हुए।

पूर्व तैयारी :– दिनांक 7,8 जून को जिला कार्यकारिणी की बैठक हुई।

❖ 26 में से 25 जिलों में वर्ग हुए।

– बजरंग लाल बागड़ा (महामन्त्री)
जळगाँव, श्रावण कृष्ण नवमी, वि.सं. 2082, तदनुसार 19 जुलाई, 2025

प्रेस नोट 1

विश्व हिंदू परिषद - अखिल भारतीय प्रबंध समिति की बैठक

***विषय** – हिंदू समाज के समक्ष चुनौतियों एवं आगामी अभियानों पर मंथन*

विश्व हिंदू परिषद की अखिल भारतीय प्रबंध समिति की दो दिवसीय बैठक 19 और 20 जुलाई को संपन्न होगी। इस बैठक में परिषद के केंद्रीय पदाधिकारी, क्षेत्र तथा प्रांतों से कार्यकर्ता भाग लेंगे। बैठक में हिंदू समाज के समक्ष खड़ी चुनौतियों पर गहन विमर्श के साथ आगामी अभियानों की रूपरेखा तय की जाएगी।

बैठक से विश्व हिंदू परिषद के महामंत्री श्री बजरंग बगड़ा ने स्पष्ट किया है कि हिंदू समाज की अस्मिता को बचाने के लिए धर्मांतरण रोकने का अभियान निरंतर जारी है। बजरंग दल और दुर्गा वाहिनी इस दिशा में देशभर में व्यापक जन–जागरण कर रहे हैं। गोरक्षा और कन्या सुरक्षा परिषद की प्राथमिकताओं में हैं। नशा मुक्ति अभियान – युवाओं में तेजी से बढ़ती नशे की प्रवृत्ति गंभीर चिंता का विषय है। बैठक में इस चुनौती से निपटने के लिए राष्ट्रव्यापी नशा मुक्ति अभियान की योजना तय होगी। इस विशेष अभियान को बजरंग दल और दुर्गावाहिनी प्रमुख रूप से आगे बढ़ाएँगे। इसके अंतर्गत विद्यालयों, महाविद्यालयों और समाज के विभिन्न वर्गों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। बैठक में यह भी तय किया जाएगा कि युवाओं में नशा मुक्ति अभियानों को प्रभावी बनाने के लिए समाज के विभिन्न संगठनों और समूहों के साथ समन्वय कैसे बढ़ाया जाए।

आज भी देश के अधिकांश मंदिरों पर सरकार का नियंत्रण है। परिषद का मानना है कि मंदिरों का प्रबंधन और उनका धन केवल हिंदू समाज के हित में ही व्यय होना चाहिए। बैठक में इस विषय पर ठोस रणनीति बनेगी। आवश्यक होने पर मुख्यमंत्रियों एवं विधायकों से संवाद, जन जागरण अभियान, सम्मेलन और जनसभाएँ आयोजित की जाएंगी।

जारीकर्ता – विजय शंकर तिवारी
अखिल भारतीय प्रचार प्रसार प्रमुख–विश्व हिंदू परिषद (दिनांक – 18 जुलाई, 2025)

प्रेस नोट 2

'हिंदू समाज को विखंडित करने वाली शक्तियों को देंगे करारा जवाब : आलोक कुमार'
'मंदिर स्वाधीनता आंदोलन की घोषणा के साथ पूर्ण हुई विहिप की जलगांव बैठक'

जलगांव, 20 जुलाई, 2025। महाराष्ट्र के जलगांव में शनिवार को प्रारंभ हुई विश्व हिंदू परिषद की केंद्रीय प्रबंध समिति की दो दिवसीय बैठक आज मंदिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति तथा हिंदू समाज को विखंडित करने वाली शक्तियों के विरुद्ध एकजुटता के संकल्प के साथ पूरी हो गई। बैठक में हुए निर्णयों की जानकारी देते हुए विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष व वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आलोक कुमार ने कहा कि हिंदू समाज का संकल्प है कि अब मंदिर सरकारी कब्जे में नहीं रहेंगे। समाज अब उन्हें मुक्त कराके ही रहेगा।

'हिंदू एकता पर प्रहारों का देंगे करारा जवाब'

इसके साथ ही बैठक में जाति, भाषा, प्रांत, क्षेत्र व लिंग इत्यादि के आधार पर हिंदू समाज के विविध घटकों को अलग–अलग करने की विभाजनकारी मानसिकता के विरुद्ध एक प्रस्ताव भी पारित किया गया, जिसमें सभी कार्यकर्ताओं, पूज्य संतों व सामाजिक संगठनों के साथ

संपूर्ण हिंदू समाज से आह्वान किया गया कि वह समाज को तोड़ने वाली इन शक्तियों को पहचान कर अपने अंतर्निहित भेदभावों को दूर कर, संगठित रहें, तो हमें ना कोई तोड़ सकेगा और ना ही मिटा सकेगा।

विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष ने यह भी कहा कि कभी पीडीए तो कभी मीम – भीम, कभी आर्य–द्रविड़ तो कभी महिषासुर–दुर्गा, कभी भाषा–जाति तो कभी राज्य व क्षेत्रवाद, तो कभी ओआरपी जैसे मुद्दों के माध्यम से कुछ हिंदूद्रोही शक्तियाँ हिंदू समाज की एकजुटता को तोड़ने में लगी हैं। हमने 1969 में ही संकल्प लिया था कि हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिंदू पतित भवेत् अर्थात् हिंदू हम सब भाई हैं। कोई ऊँचा–नीचा नहीं है। हम हिंदू द्रोहियों के विभाजनकारी षड्यंत्रों को फलीभूत नहीं होने देंगे।

इस सम्बन्ध में, विहिप की इस केंद्रीय प्रबंध समिति बैठक में 'संगठित एवं सशक्त हिंदू ही समाज विखंडन के षड्यंत्रों का एकमेव समाधान' नाम से पारित एक प्रस्ताव में कहा गया है कि 'इन विघटनकारी प्रवृत्तियों के पीछे विस्तारवादी चर्च, कट्टरपंथी इस्लाम, मार्क्सवाद, धर्मनिरपेक्षतावादी तथा बाजारवादी शक्तियाँ तीव्रगति से सक्रिय हैं। इसके लिए विदेशी वित्त पोषित, तथाकथित प्रगतिशीलतावादी, धर्मांतरणकारी शक्तियाँ और भारत विरोधी वैश्विक समूह भी सक्रिय हैं। इनका अंतिम लक्ष्य हिंदू समाज को तोड़ना और भारत की जड़ों पर प्रहार करना है।' प्रस्ताव में हिंदू समाज से आह्वान करते हुए कहा गया है कि वो 'विखंडनकारी शक्तियों को पहचान कर अपने अंतर्निहित भेदभावों को जड़मूल से समाप्त करें।' इसमें सरकारों से भी 'नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में समाविष्ट' करने का आह्वान किया गया है।

'मंदिर स्वाधीनता आंदोलन'

श्री आलोक कुमार ने कहा कि बैठक में मंदिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति हेतु एक व्यापक कार्य योजना भी बनाई गई है। इसके अंतर्गत हिंदू समाज के प्रतिनिधि आगामी 7 से 21 सितंबर के बीच राज्यों के मुख्यमंत्रियों से मिलकर इस संबंध में ज्ञापन देंगे। प्रत्येक महानगर में प्रबुद्ध जनों की सभा करके इसके प्रति समर्थन बढ़ाया जाएगा। दूसरे चरण में, देश की सभी बड़ी विधानसभाओं के सत्र के दौरान विधायकों से व्यापक संपर्क करेंगे, जिससे वे अपनी राज्य सरकारों पर इस हेतु उचित दबाव बना कर, मंदिरों को स्वाधीन करा सकें।

महाराष्ट्र के जलगांव स्थित बलाणी रिसॉर्ट में संपन्न हुई इस द्विदिवसीय बैठक में विहिप के केंद्रीय महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा ने संगठन की छमाही प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत कर पिछली बैठक की कार्यवाही का अनुमोदन भी सदन से कराया। इसमें विहिप के संगठन महामंत्री श्री मिलिंद परांडे, सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपांडे, वरिष्ठ उपाध्यक्ष व श्री राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र के महा सचिव श्री चंपतराय, कोषाध्यक्ष श्री रमेश गुप्ता के अतिरिक्त बजरंग दल, दुर्गावाहिनी, मातृ शक्ति, गौरक्षा, सेवा, समरसता, सत्संग, धर्मप्रसार, मठ मंदिर जैसे आयामों के राष्ट्रीय व क्षेत्रीय प्रमुख भी उपस्थित थे। इसमें देश भर के सभी प्रांतों के 265 विहिप पदाधिकारियों तथा नेपाल से पधारे संगठन के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

प्रारित प्रस्ताव 2

संगठित एवं सशक्त हिन्दू ही समाज विखण्डन के षड्यन्त्रों का एकमेव समाधान

हिन्दू समाज मानव कल्याण के ईश्वर प्रदत्त पुनीत कार्य में सतत् कार्यरत रहा है। अनेक आसुरी शक्तियाँ इसको विखण्डित करती रही हैं। वर्तमान में इनकी गति और अधिक तीव्र हो गई है। जाति, भाषा, प्रान्त, क्षेत्र, लिंग, पूजा–पद्धति, परम्परा, रीति–नीति तथा आचार–विचार के नाम पर हमारी सामाजिक एकता को विविध प्रकार से तोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। हिन्दू को हिन्दू के ही विरुद्ध खड़ा किया जा रहा है। जातीय दुराग्रह के आधार पर समाज को विभाजित करने तथा भारत उद्भूत धार्मिक एवं पांथिक व्यवस्थाओं में परस्पर अविश्वास निर्माण करने के षड़यन्त्र एवं धर्मांतरण का सुनियोजित कुचक्र, हिन्दू प्रतीकों, पूज्य संतों, परम्पराओं एवं त्योहारों के प्रति अश्रद्धा निर्माण करना, हिन्दू पहचान को मिटाने के प्रयास तथा हिन्दू युवा और महिला शक्ति के मन में अपनी ही परम्परा के प्रति आत्महीनता उत्पन्न कर, उन्हें उनके मूल से काटना ही इनका उद्देश्य है। इन विघटनकारी प्रवृत्तियों के पीछे विस्तारवादी चर्च, कट्टरपंथी इस्लाम, मार्क्सवाद, धर्मनिरपेक्षतावादी तथा बाजारवादी शक्तियाँ तीव्रगति से सक्रिय हैं। इसके लिए विदेशी वित्त पोषित, तथाकथित प्रगतिशीलतावादी, धर्मांतरणकारी शक्तियाँ और भारत विरोधी वैश्विक समूह भी सक्रिय हैं। इनका अन्तिम लक्ष्य हिन्दू समाज को तोड़ना और भारत की जड़ों पर प्रहार करना है ।

विश्व हिन्दू परिषद की प्रबंध समिति का यह मत है कि इन षड़यन्त्रों के बावजूद भी हिन्दू जागरण प्रारम्भ हो चुका है। विधर्मियों की अनवरत कुचेष्टाओं का उत्तर देते हुए देश के कोने–कोने से हिन्दू समाज पुनः अपने धर्म, परम्परा, संस्कृति और मूल की ओर लौट रहा है। महाकुंभ, कांवड़यात्राएँ, श्रीअमरनाथ यात्रा, श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के सभी चरणों में समाज की सहभागिता, गौरक्षा आन्दोलनों, विभिन्न धार्मिक आयोजनों, तीर्थों तथा मन्दिरों में हिन्दू समाज के विराट स्वरूप का प्रकटीकरण हो रहा है। राष्ट्रीय एवं हिन्दू जीवन मूल्यों से जुड़े साहित्य, कला, संगीत आदि के प्रति बढ़ता हुआ आकर्षण, हिन्दू नायकों के प्रति बढ़ती श्रद्धा एवं आक्रान्ताओं के प्रति बढ़ता आक्रोश ये सब हिन्दू जागरण के ही प्रकट लक्षण हैं।

विश्व हिन्दू परिषद सभी कार्यकर्ताओं, पूज्य संतों, सामाजिक, धार्मिक संगठनों, मातृशक्ति तथा समस्त हिन्दू समाज का आह्वान करती है कि वे विखण्डनवादी शक्तियों को पहचानें। अपने अन्तर्निहित भेदभावों को जड़मूल से समाप्त करें। सरकारें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में समाविष्ट करें। प्रत्येक हिन्दू जागृत एवं संगठित होकर समाजविरोधी शक्तियों का प्रभावी प्रतिकार करे, तभी हमें न कोई तोड़ सकेगा और न ही मिटा सकेगा।

प्रस्तोता : श्री वीरेन्द्र विमल जी, रांची

अनुमोदक : श्री रविकुमार जी, भाग्यनगर

पंच परिवर्तन से बदल जाएगा समाज का चेहरा-मोहरा

प्रो. संजय द्विवेदी

इतिहास के चक्र में किसी सांस्कृतिक संगठन के सौ साल की यात्रा साधारण नहीं होती। यह यात्रा बीज से बिरवा और अंततः उसके वटवृक्ष में बदल जाने जैसी है। ऐसे में उस संगठन के भविष्य की यात्रा पर विमर्श होना बहुत स्वाभाविक है। स्वतंत्रता के अमृतकाल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संकल्प भविष्य के भारत की रचना में सहयोगी बन सकते हैं। अपने शताब्दी वर्ष में संघ ने 'पंच परिवर्तन' का संकल्प लिया है। यह पंच परिवर्तन क्या है ? इससे क्या होने वाला है ? इसे भी जानना जरूरी है। संघ की मान्यता है कि व्यवस्था परिवर्तन का लक्ष्य तभी पूरा होगा, जब भारत की व्यवस्थाएँ 'स्व' पर आधारित हों। 'स्व' आधारित तंत्र बनाना साधारण नहीं है। महात्मा गाँधी से लेकर देश के तमाम विचारक और राजनेता 'स्व' की बात करते रहे, किंतु व्यवस्था ने उनके विचारों को अप्रासंगिक बना दिया। समाज परिवर्तन के बिना व्यवस्था परिवर्तन संभव नहीं, इसे भी सब मानते हैं। वैचारिक संभ्रम इसका बहुत बड़ा कारण है। हम आत्मविस्मृति के शिकार और आत्मदैन्य से घिरे हुए समाज हैं। गुलामी के लंबे कालखंड ने इस दैन्य को बहुत गहरा कर दिया है। इससे हम अपना मार्ग भटक गए। स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, बाबा साहब आंबेडकर हमें वह रास्ता बताते हैं, जिन पर चलकर हम अपनी कुरीतियों से मुक्त एक सक्षम, आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी समाज बन सकते थे। किंतु अँग्रेजों के बाद सत्ता में आए नायकों ने सारा कुछ बिसरा दिया। उस आरंभिक समय में भी दीनदयाल उपाध्याय और डा. राममनोहर लोहिया जैसे नायक भारत की आत्मा में झांकने का प्रयास करते रहे, किंतु सत्ता की राजनीति को वे विचार अनुकुल नहीं थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन का जो संकल्प लिया है, वह भारत की चिति और उसकी स्मृति को जागृत करने का काम करेगा। राष्ट्रीय चेतना का स्तर बढ़ाने के लिए 1. नागरिक कर्तव्य, 2. स्वदेशी, 3. पर्यावरण संरक्षण, 4. समरसता, 5.कुटुंब प्रबोधन जैसे पाँच संकल्प ही पंच परिवर्तन के सूत्र हैं। इन विषयों में भारत की आत्मा को झकझोरकर जगाने और 'नया भारत' बनाने का संकल्प झलकता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन का जो संकल्प लिया है, वह भारत की चिति और उसकी स्मृति को जागृत करने का काम करेगा। राष्ट्रीय चेतना का स्तर बढ़ाने के लिए 1. नागरिक कर्तव्य, 2. स्वदेशी, 3. पर्यावरण संरक्षण, 4. समरसता, 5.कुटुंब प्रबोधन जैसे पाँच संकल्प ही पंच परिवर्तन के सूत्र हैं। इन विषयों में भारत की आत्मा को झकझोरकर जगाने और 'नया भारत' बनाने का संकल्प झलकता है।

'नागरिक कर्तव्यबोध से नवचेतन का संचार'

किसी भी राष्ट्र और लोकतंत्र की सफलता उसके नागरिकों की सहभागिता और कर्तव्यबोध से ही सार्थक होती है। एक जीवंत लोकतंत्र की गारंटी उसकी नागरिक चेतना ही है। कानूनों की अधिकता और उसे न मानने का मानस दोनों साथ–साथ चलते हैं। अपनी माटी के प्रति प्रेम, उत्कट राष्ट्रभक्ति ही सफल राष्ट्र का आधार है। जापान जैसे देशों का उदाहरण देते समय हमें देखना होगा कि क्या हमारी राष्ट्रीय चेतना और संवेदना वही है जो एक जापानी में है। आखिर क्या कारण है कि अपनी महान परंपराओं, ज्ञान परंपरा के बाद भी हम एक लापरवाह और कुछ मामलों में अराजक समाज में बदलते जा हैं। कानूनों को तोड़ना यहाँ फैशन है। यहाँ तक की हम सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने और सड़कों पर रेड लाइट का उल्लंधन करने से भी बाज नहीं

आते। ये बहुत छोटी बातें लगती हैं, किंतु हैं बहुत बड़ी। चुनावों में शत प्रतिशत मताधिकार तो दूर का सपना है। बहुत शिक्षित शहरों में वोटिंग 50 प्रतिशत से आगे नहीं बढ़ पाती। ये सूचनाएँ बताती हैं कि हमें अभी जागरूक नागरिक या सजग भारतीय होना शेष है। कानूनों का पालन, कर का समय पर भुगतान, सामाजिक और सामुदायिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा जरूरी है। एक शानदार समाज की पहचान है कि वह अपने परिवेश को न सिर्फ स्वच्छ और सुंदर बनाने का प्रयास करता है, बल्कि अपने प्रयासों से अन्यों को भी प्रेरित करता है। देखा जाता है कि हममें अधिकार बोध बहुत है किंतु कर्तव्यबोध कई बार कम होता है। जबकि संविधान हमें मौलिक अधिकारों के साथ कर्तव्यों की भी सीख देता है। हमारे धार्मिक ग्रंथ हमें नागरिकता और सामाजिक आचरण का पाठ पढ़ाते हैं। सवाल यह है कि हम उन्हें अपने जीवन में कितना उतार पाते हैं।

'स्वदेशी से बनेगा स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर भारत'

पंचपरिवर्तन का दूसरा सूत्र है 'स्वदेशी'। स्वदेशी सिर्फ आत्मनिर्भरता का मामला नहीं है, यह राष्ट्रीय स्वाभिमान का भी विषय है। अपनी जमीन पर खड़े रहकर विकास की यात्रा ही स्वदेशी का मूलमंत्र है। विनोबा जी कहते थे – "स्वदेशी का अर्थ है आत्मनिर्भरता और अहिंसा।" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसे सादगी से भी जोड़ता है। जिसके मायने हैं मितव्ययिता से जियो, कंजूसी से नहीं। स्वदेशी का सोच बहुत व्यापक है। परिवारों में भाषा, वेशभूषा, भवन, भ्रमण, भजन और भोजन ये छः चीजें हमारी ही होनी चाहिए। हम विदेशी भाषा, बोलें, दुनिया के साथ संवाद करें। किंतु अपने परिवारों अपनी मातृभाषा का उपयोग करें। विदेशी वस्त्रों से परहेज नहीं, किंतु पारिवारिक मंगल आयोजनों और उत्सवों में अपनी वेशभूषा धारण करें। स्वभूषा, उपासना पद्धति, भोजन हमारा होना चाहिए। इसी तरह हम पूरी दुनियाँ घूमकर आएँ, किंतु भारत के तपोस्थलों, तीर्थस्थलों, वीरभूमियों तक भी हमारा प्रवास हो। हमारे परिजन जानें की राणा प्रताप कौन हैं और चित्तौड़गढ़ कहाँ है। शिवाजी कौन थे और रायगढ़ कैसा है। जालियांवालाबाग कहाँ है। इसी तरह हमारे घर भारतीयता का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखने चाहिए। वहाँ एक भारतीय परिवार रहता है, यह प्रकट होना चाहिए। महापुरूषों की तस्वीरें। अपनी भाषा में नाम पट्ट और स्वागतम् जैसे उच्चार लिखे हों। परिवारों में हमारी सँस्कृति की छाप साफ दिखनी चाहिए। तुलसी का पौधा और पूजाघर के साथ, किताबों का एक कोना भी हो, जिसमें हमारे धार्मिक ग्रंथ गीता, रामायण, महाभारत आदि अवश्य हों। उनका समय–समय पर पाठ भी परिवार के साथ हो। हमारी जीवनशैली आधुनिक हो किंतु पश्चिमी शैली का अंधानुकरण न हो। परिवार में काम करने वाले सेवकों के प्रति सम्मान की दृष्टि भी जरूरी है। ऐसे अनेक विषय हैं, जिन पर विचार होना चाहिए।

'सामाजिक समरसता से बनेगी सुंदर दुनियाँ'

सामाजिक समरसता के बिना कोई भी राष्ट्र अग्रणी नहीं बन सकता। गुरु घासीदास कहते हैं– "मनखे–मनखे एक हैं।" किंतु जातिवाद ने इस भेद को गहरा किया है। तमाम प्रयासों के बाद भी आज भी हम इस रोग से मुक्त नहीं हो सके हैं। भेदभाव ने हमारे समाज को विभाजित कर रखा है, जिसके चलते दुनियाँ में हमारी छवि ऐसी बनाई जाती है कि हम अपने ही लोगों से मानवीय व्यवहार नहीं करते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी कहते थे–"अस्पृश्यता ईश्वर और मानवता के प्रति अपराध है।" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक रहे पू. बालासाहब देवरस ने इस संकट को रेखांकित करते हुए बसंत व्याख्यानमाला में कहा था कि– "अगर छूआछूत गलत नहीं है, तो दुनियाँ में कुछ भी गलत नहीं है, इसे मूल

पर्यावरण संरक्षण से होगी जीवन रक्षा'

प्रकृति के साथ संवाद और सहजीवन भारत का मूल विचार है। अपनी नदियों, पहाड़ों और पेड़–पौधों में ईश्वर का वास देखने की हमारी सँस्कृति और परंपरा रही है। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना असंभव है। प्रदूषण आज बहुत बड़ी चिंता बन गया है। कुछ भी स्वच्छ नहीं रहा। हवा भी जहरीली है। इसलिए हमें अपने भारतीय विचारों पर वापसी करनी ही होगी। प्रकृति और पर्यावरण के साथ सार्थक संवाद ही हमें बचा पाएगा। ग्लोबल वार्मिंग जैसी चिंताएँ हमारे सामने चुनौती की तरह हैं। पानी, बिजली को बचाना, प्लास्टिक मुक्त समाज बनाने के साथ वाहनों का संयमित उपयोग जरूरी है। एयरकंडीशनर का न्यूनतम उपयोग, वनों और जंगलों की रक्षा जैसे अनेक प्रयासों से हम सुंदर दुनियाँ बना सकते हैं। घरों में पेड़–पौधे लगाएँ और हरित घर का संकल्प लें। सच तो यह है कि अगर हम पर्यावरण की रक्षा करेंगें, तो वह हमारी रक्षा करेगा।

से नष्ट कर देना चाहिए।" ऐसे में हमें यह समझना होगा कि जो कुछ भी सैकड़ों सालों से परंपरा के नाम पर चल रहा है, वह हमारा धर्म नहीं है। इतिहास में हुए इन पृष्ठों का कोई भी सभ्य समाज समर्थन नहीं कर सकता। जबकि हमारे धर्म ग्रंथ और शास्त्र इससे अलग हैं। हमारे ऋषि और ग्रंथों के रचयिता सभी वर्गों से हैं। भगवान बाल्मीकि और वेद व्यास इसी परंपरा से आते हैं। यानि यह भेद शास्त्र आधारित नहीं है। यह विकृति है। इससे मुक्ति जरूरी है। हमें इसके सचेतन प्रयास करते हुए अपने आचरण, व्यवहार और वाणी से समरसता का अग्रदूत बनना होगा। सभी समाजों और वर्गों से संवाद और सहकार बनाकर हम एक आदर्श समाज की रचना में सहयोगी हो सकते हैं। इससे समाज का सशक्तिकरण भी होगा। समानता का व्यवहार, वाणी संयम, परस्पर सहयोग, संवेदनशीलता से हम दूरियों को घटा सकते हैं और भ्रम के जाले साफ कर सकते हैं। साथ ही अपने गाँव, नगर के मंदिर, जलश्रोत, श्मशान सबके लिए समान रूप से खुल होने ही चाहिए। इसमें कोई भी भेद नहीं होना चाहिए।

'हमारी शक्ति है 'कुटुंब'

आज का सबसे बड़ा संकट कुटुंब का बिखराव है। एकल परिवारों में बंटते जाना और अकेले होते जाना इस समय की त्रासदी है। जबकि कल्याणकारी कुटुंब वह है, जहाँ सब संरक्षण, स्नेह और संवेदना के सूत्र में बंधे होते हैं। जहाँ बालकों को प्यार और शिक्षा, वयस्कों को सम्मान और बुजुर्गों को सम्मान और सेवा मिलती है। परिवार हमारी शक्ति बनें, इसके लिए पंच परिवर्तन का बड़ा मंत्र है– कुटुंब प्रबोधन। कुटुंब की एक परंपरा होती है। हम उसे आगे बढ़ाते हैं और संरक्षित करते हैं। मूल्य आधारित जीवन इससे ही संभव होता है। परिवार के मूल्यों से ही बच्चों को संस्कार आते हैं और वे सीखते हैं। जैसे देखते हैं वैसा ही आचरण करते हैं। कुटुंब वस्तुतः रिश्तों का विस्तार है। जिसमें पति–पत्नी और बच्चों के अलावा हमारे सगे–संबंधी भी शामिल हैं। उनके सुख में सुख पाना, दुख में दुखी होना और उन्हें संबल देना हमें मनुष्य बनाता है। इसके लिए बच्चों के साथ–साथ रिश्तों को समय देना जरूरी है। औपचारिक और अनौपचारिक रुप से कार्यक्रमों, खान–पान, उत्सवों के माध्यमों से ये रिश्ते दृढ़ होते जाएँ, यह बहुत जरूरी है।

पंच परिवर्तन के साधारण दिखने वाले सूत्रों में ही भारत की आत्मा के दर्शन होते हैं। इन सूत्रों को अपनाकर हम एक सुंदर भारत बनाने की दिशा में बड़ा काम कर सकते हैं। संघ की शताब्दी वर्ष में लिए गए ये संकल्प हमें एक समाज और राष्ट्र के रूप में संबल देने का काम करेगें, इसमें दो राय नहीं है। 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में राममंदिर में भगवान की प्राणप्रतिष्ठा के बाद राम राज्य की ओर हम बढ़ चले हैं। राम राज्य के मूल्य हमारे जीवन में आएँ। परिवारों में आएँ। इससे एक सबल, आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी भारत बनेगा। आचरण की शुचिता से आए परिवर्तन ही स्थाई होते हैं। इससे ही हमारे मन में राम रमेंगे और देश में रामराज्य आएगा।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में जनसंचार विभाग के आचार्य और अध्यक्ष हैं।)

धर्मांतरण के विरुद्ध बने कठोर कानून

जयपुर, 11 जुलाई 2025। प्रदेश में लगातार हो रही जबरन तथा अवैध धर्मांतरण की घटनाओं को लेकर विश्व हिंदू परिषद का प्रतिनिधि मंडल शुक्रवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मिला। प्रतिनिधि मंडल में सम्मिलित विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार, क्षेत्रीय संगठन मंत्री राजाराम, क्षेत्रीय मंत्री सुरेश उपाध्याय सहित प्रांत पदाधिकारीगण परमेश्वर, सुंदर कटारिया, राधेश्याम गौतम एवं विवेक दिवाकर ने राज्य सरकार से अवैध धर्मांतरण के विरुद्ध कठोरतम कानून बनाने की मांग की। उन्होंने कहा कि प्रदेश के हर शहर–कस्बे में धर्मांतरण के षडयंत्र को सुनियोजित तरीके से फैलाया जा रहा है। हमारे देवी–देवताओं और सँस्कृति के विरुद्ध विष वमन आम हो चला है तथा लालच, झूठ, प्रलोभन, इलाज के मिथ्या दावों के जरिए आम लोगों को बहलाया जा रहा है। इससे न केवल हिंदुओं की आस्था को चोट पहुँचती है, बल्कि अवैध

धर्मांतरण देश की एकता और अखंडता के लिए भी बहुत बड़ा खतरा है।

विश्व हिंदू परिषद ने प्रदेश के जनजाति बहुल इलाकों का उदाहरण देते हुए कहा कि धर्मांतरण के कारण जनजातीय समाज की अनूठी परंपराओं पर भी अस्तित्व का संकट आ खड़ा हुआ है। इसलिए धर्मांतरण के विरुद्ध कठोर कानून न केवल हिंदू समाज, भारतीय सँस्कृति, जनजातीय अस्मिता की रक्षा बल्कि देश की अखंडता के लिए भी अनिवार्य है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रतिनिधि मंडल की मांग के अनुरूप कठोर कानून बनाने का आश्वासन दिया है।

छांगुर का धर्मांतरण नेटवर्क

579 जिलों में 3000 गुर्गे, 1000 युवक लड़कियों को प्रेमजाल में फंसाये

अमर उजाला नेटवर्क, नई दिल्ली /बलरामपुर। विजय पुंडीर 14 जुलाई, 2025। छांगुर ने देश के 579 जिलों की पहचान कराई थी, जहाँ हिंदू बहुसँख्यक हैं। इन जिलों में हिंदू युवतियों को मुस्लिम बनाने के लिए मुहिम चलाने का ताना–बाना बुना था। इसके लिए छांगुर ने 3,000 से अधिक युवाओं को बतौर अनुयायी मैदान में उतारा था। वहीं छांगुर ने लड़कियों को प्रेम जाल में फंसाने के लिए 1,000 मुस्लिम युवकों की फौज तैयार की थी।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की जांच में धर्मांतरण के आरोपी जमालुद्दीन उर्फ छांगुर से जुड़े 30 बैंक खातों का पता चला है, जिनमें विदेश से जमकर धन जमा कराया गया। इनमें से 18 खातों में 68 करोड़ रुपये के लेनदेन का पता चला है। बीते तीन महीने के भीतर ही इन खातों में सात करोड़ रुपये जमा कराए गए।

अधिकारियों का मानना है कि यह पैसा विदेशी फंडिंग नेटवर्क के जरिये आया है, जिसका इस्तेमाल उत्तर प्रदेश के बलरामपुर समेत अन्य स्थानों पर बड़े पैमाने पर संपत्ति खरीदने व धर्मांतरण में किया गया। सूत्रों ने बताया कि ईडी छांगुर के अन्य बैंक खातों, संपत्ति और आयकर रिटर्न के बारे में जानकारी जुटा रहा है। छांगुर से जुड़े बैंक खातों में गैर सरकारी संगठन, ट्रस्ट और निजी खाते हैं। ईडी इन खातों से जुड़े लोगों व संस्थाओं को पूछताछ के लिए बुला सकता है। छांगुर ने गिरोह को कानूनी रूप देने के लिए चार अलग सँस्थाएँ बना रखी थीं।

579 जिलों में जुटे थे छांगुर के 3000 गुर्गे – छांगुर ने देश के 579 जिलों की पहचान कराई थी, जहाँ हिंदू बहुसँख्यक हैं। इन जिलों में हिंदू युवतियों को मुस्लिम बनाने के लिए मुहिम चलाने का तानाबाना बुना था। इसके लिए छांगुर ने तीन हजार से अधिक युवाओं को बतौर अनुयायी मैदान में उतारा था।

बेटे को दुनियाँ में सबसे अमीर बनाना चाहता था छांगुर – छांगुर अपने बेटे महबूब को दुनियाँ का सबसे अमीर आदमी बनाने का ख्वाब देख रहा था। धर्मांतरण से कमाई करने के साथ ही वह प्रापर्टी व अन्य कार्य करने की जमीन तैयार रहा था। वह बेटे को अरबपति बनाने के साथ ही टीम का मुखिया बनाना चाहता था।

छांगुर के तीन सहयोगी रडार पर – छांगुर की गिरफ्तारी के बाद कार्रवाई में तेजी आई है। एटीएस ने छांगुर के खास सिपहसालारों के बारे में भी पड़ताल शुरू कर दी है। कस्बे के साथ ही मधपुर व रेहरा माफी गाँव के लोगों से जानकारी जुटाई जा रही है। पता चला कि आजमगढ़ में छांगुर के इशारे पर धर्मांतरण कराने वाले दो सिपहसालार क्षेत्र में ही मौजूद हैं। छांगुर के लिए अभी भी दोनों लोग सक्रिय हैं और मामले में हो रही कार्रवाई की जानकारी कर रहे हैं। साथ ही मधपुर का ही एक शागिर्द भी गुपचुप तरीके से पुलिस व एटीएस की कार्रवाई पर नजर रख रहा है।

1000 मुस्लिम युवकों की फौज तैयार की – जांच में पता चला है कि छांगुर ने लड़कियों को प्रेमजाल में फंसाने के लिए 1,000 मुस्लिम युवकों की फौज तैयार की थी। उसका जाल महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, बिहार और पश्चिम बंगाल तक फैला हुआ था। उसे विदेश से अकूत धन मिलता था, जिसके जरिये वह अपने नापाक मंसूबों को अंजाम देता था। हिंदूओं लड़कियों को प्रेम जाल में फंसाने के लिए वह मुस्लिम युवकों को पैसे देता था। नेपाल सीमा से सटे सात जिलों को टारगेट किया गया था।

नसरीन के खाते में 14 करोड़ आए – छांगुर की बड़ी राजदार नीतू रोहरा उर्फ नसरीन थी। उसके खाते में चार माह में 14 करोड़ रुपये आए हैं। उन्हें तुरंत निकाल लिया गया। वहीं, उसके पति नवीन उर्फ जलालुद्दीन के खातों में भी 18 करोड़ रुपये जमा कराए गए हैं

(अमर उजाला से साभार)

प्रयागराज में दलित बच्चियों का धर्म बदलकर आतंकवादी बनाने की साजिश का बड़ा खुलासा

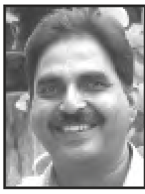

संजय सक्सेना

उत्तर प्रदेश का प्रयागराज जो एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शहर है, वह हाल ही में एक सनसनीखेज और चिंताजनक घटना के कारण सुर्खियों में आया है। पुलिस ने एक खतरनाक साजिश का पर्दाफाश किया है, जिसमें दलित नाबालिग लड़कियों को बहला–फुसलाकर उनका धर्म परिवर्तन कराने और उन्हें आतंकवादी गतिविधियों में शामिल करने की योजना थी। इस मामले ने न केवल स्थानीय समुदाय को झकझोर दिया है, बल्कि पूरे देश में सामाजिक और धार्मिक संवेदनशीलता पर सवाल उठाए हैं।

यह सनसनीखेज मामला तब सामने आया, जब प्रयागराज पुलिस को सूचना मिली कि फूलपुर इलाके में एक दलित नाबालिग लड़की का अपहरण कर, उसे पहले दिल्ली और फिर केरल ले जाया गया। जांच में पता चला कि इस अपहरण के पीछे एक सुनियोजित साजिश थी, जिसका उद्देश्य नाबालिग लड़कियों को धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर करना और उन्हें आतंकवादी संगठनों में भर्ती करना था। पुलिस ने इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया और लड़की को सुरक्षित बरामद कर उसके परिजनों को सौंप दिया।

आरोपियों ने कथित तौर पर लड़की को बहला–फुसलाकर पहले दिल्ली ले गए, जहाँ उसे मानसिक रूप से प्रभावित करने की कोशिश की गई। इसके बाद उसे केरल ले जाया गया,

जहाँ उसका जबरन धर्म परिवर्तन कराने और आतंकवादी गतिविधियों में शामिल करने की योजना थी। इस साजिश में शामिल लोगों ने नाबालिगों को निशाना बनाया, क्योंकि उन्हें लगता था कि कम उम्र की लड़कियाँ आसानी से प्रभावित हो सकती हैं।

जांच से पता चला कि यह गिरोह विशेष रूप से दलित समुदाय की नाबालिग लड़कियों को निशाना बनाता था। इन लड़कियों को पहले लालच देकर या भावनात्मक रूप से प्रभावित करके अपने जाल में फंसाया जाता था। इसके बाद उन्हें उनके परिवारों से दूर ले जाकर धर्म परिवर्तन के लिए दबाव डाला जाता था। इस साजिश का अंतिम लक्ष्य इन लड़कियों को आतंकवादी संगठनों के लिए तैयार करना था, ताकि वे जिहादी गतिविधियों में शामिल हो सकें। यह खुलासा न केवल सामाजिक दृष्टिकोण से गंभीर है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी एक बड़ा खतरा है।

प्रयागराज पुलिस ने इस मामले में त्वरित और प्रभावी कार्रवाई की। सूचना मिलने पर पुलिस ने तुरंत जांच शुरू की और अपहरण के कुछ ही समय बाद लड़की को केरल से बरामद कर लिया। इस ऑपरेशन में शामिल पुलिसकर्मियों ने अपनी सूझबूझ और तत्परता से एक बड़े खतरे को टाल दिया। गिरफ्तार किए गए दो आरोपियों से पूछताछ जारी है और पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि इस साजिश में और कौन–कौन शामिल हो सकता है। पुलिस का मानना है कि यह एक बड़े आतंकी मॉड्यूल का हिस्सा हो सकता है, जिसके तार देश के विभिन्न हिस्सों से जुड़े हो सकते हैं।

इस घटना ने सामाजिक और धार्मिक स्तर पर कई सवाल खड़े किए हैं। दलित समुदाय, जो पहले से ही सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, अब इस तरह की साजिशों का शिकार बन रहा है। यह घटना समाज में विश्वास की कमी को और गहरा सकती है। साथ ही धर्म परिवर्तन जैसे संवेदनशील मुद्दे पर यह मामला एक नई बहस को जन्म दे सकता है। कई संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस घटना की निंदा की है और सरकार से ऐसी साजिशों को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने की मांग की है। अब देखना यह है कि हर समय ओबीसी और पीडीए का राग अलापने वाले नेता इस मसले पर कुछ बोलते हैं, या, फिर तुष्टिकरण की सियासत के चलते पहले की तरह इस समय भी मुँह बंद रखेंगे।

skslko28@gmail.com

जयपुर प्रांत की संत मार्गदर्शक मंडल बैठक सम्पन्न

विश्व हिंदू परिषद जयपुर प्रांत की संत मार्गदर्शक मंडल बैठक चिंता हरण काले हनुमान मंदिर मानसरोवर में संपन्न हुई, जिसमें अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। बैठक की अध्यक्षता महंत हरिशंकर वेदांती एवं मनोहर दास महाराज जी ने की। इस अवसर पर धर्मांतरण, समरसता, कुटुंब प्रबोधन आदि विषयों पर संतों का उद्‌बोधन एवं सुझाव प्राप्त हुआ। इस अवसर पर प्रांत के अध्यक्ष प्यारेलाल मीणा, क्षेत्र मंत्री सुरेश उपाध्याय, प्रांत मंत्री राधेश्याम गौतम एवं प्रांत मार्गदर्शक मंडल के सदस्य, प्रांत एवं महानगर के धर्माचार्य संपर्क प्रमुख चंद्र प्रकाश जी, राजेश जी शर्मा, प्रांत सहसंयोजक परमवीर सिंह चौहान आदि महानुभव एवं संत महात्मा उपस्थित रहे। सभी ने समाज जागरण का संकल्प लिया। शांति पाठ जय घोष के साथ बैठक समाप्त हुई।

यूरिक एसिड की समस्या : 17 घरेलू नुस्खे

- 1 चम्मच अश्वगंधा पाउडर में 1 चम्मच शहद मिलाकर 1 गिलास गुनगुने दूध के साथ पिएँ।
- रोज रात में सोने के पूर्व 3 अखरोट खायें।
- एलोवेरा जूस में आंवले का रस मिलाकर पीने से भी आराम आता है।
- नारियल पानी रोज पिएं।
- खाना खाने के आधे घंटे बाद 1 चम्मच अलसी के बीज चबाकर खाने से फायदा मिलता है।
- बथुए का जूस खाली पेट पिएँ। दो घंटे तक कुछ न खाएँ–पिएँ।
- अजवाइन भी शरीर में हाइ यूरिक एसिड को कम करने की अच्छी दवा है। इसलिए भोजन पकाने में अजवाइन का इस्तेमाल करें।
- हर रोज दो चम्मच सेब का सिरका 1 गिलास पानी में मिलाकर दिन में 3 बार पिएँ। लाभ दिखेगा।
- सेब, गाजर और चुकंदर का जूस हर रोज पीने से बॉडी का pH लेवल बढ़ता है और यूरिक एसिड कम होता है।
- एक मध्यम आकार का कच्चा पपीता लें, उसे काटकर छोटे–छोटे टुकड़े कर लें। बीजों को हटा दें। कटे हुए पपीते को 2 लीटर पानी में 5 मिनट के लिए उबालें। इस उबले पानी को ठंडा करके छान लें और इसे दिन में चाय की तरह 2 से 3 बार पिएँ।
- नींबू पानी पिएँ। ये बॉडी को डिटॉक्सिफाइ करता है और क्रिस्टल को घोलकर बाहर कर देता है।
- कुकिंग के लिए तिल, सरसों, राइस ब्रान या ऑलिव ऑयल का प्रयोग करें। रिफाइंड तेल का भूलकर भी प्रयोग न करें। हाइ फाइबर डाइट लें।
- अगर लौकी का मौसम हो तो सुबह खाली पेट लौकी (घीया, दूधी) का जूस निकाल कर एक गिलास इस में 5–5 पत्ते तुलसी और पुदीना के भी डाल ले, अब इसमें थोड़ा सेंधा नमक मिला ले और इसको नियमित कम से कम 30 से 90 दिन तक पिएँ।
- रात को सोते समय डेढ़ गिलास साधारण पानी में अर्जुन की छाल का चूर्ण एक चम्मच और दाल चीनी पाउडर आधा चम्मच डाल कर चाय की तरह पकायें और थोड़ा पकने पर छान कर निचोड़ कर पी लें। ये भी 30 से 90 दिन तक करें।
- चोबचीनी का चूर्ण का आधा–आधा चम्मच सवेरे खाली पेट और रात को सोने के समय पानी से लेने पर कुछ दिनों में यूरिक एसिड खत्म हो जाता है।
- दिन में कम से कम 3–5 लीटर पानी का सेवन करें। पानी की पर्याप्त मात्रा से शरीर का यूरिक एसिड पेशाब के रास्ते से बाहर निकल जाएगा। इसलिए थोड़ी थोड़ी देर में पानी को जरूर पीते रहें।
- सुबह खाली पेट एक गिलास मूली का रस एक चुटकी सेंधा नमक के साथ मात्र 15 दिन पियें और जादू देखें।

'यूरिक एसिड में परहेज'

- खटाई, टमाटर, दही, चावल, अचार, ड्राई फ्रूट्स, दाल, पनीर और पालक बंद कर दें।
- 'ओमेगा 3 फैटी एसिड का सेवन न करें।'
- पैनकेक, केक, पेस्ट्री जैसी वस्तुएँ न खाएँ।
- डिब्बा बंद फूड खाने से बचें।
- शराब और बीयर से परहेज करें।
- रात को सोते समय दूध या दाल का सेवन अत्यंत हानिकारक हैं।
- अगर दाल खातें हैं, तो ये छिलके वाली खानी है, धुली हुयी दालें यूरिक एसिड की समस्या के लिए
- सबसे बड़ी बात खाना खाते समय पानी नहीं पीना, पानी खाने से डेढ़ घंटे पहले या बाद में ही पीना हैं।
- फास्ट फूड, कोल्ड ड्रिंक्स, पैकेज्ड फूड, अंडा, मांस, मछली, शराब और धूम्रपान बिलकुल बंद कर दें। क्योंकि इनसे आपकी यूरिक एसिड की समस्या, हार्ट की कोई भी समस्या, जोड़ों के दर्द, हाई ब्लड प्रेशर की समस्या में बहुत आराम आएगा।

पटना क्षेत्र की धर्मप्रसार बैठक संपन्न

विश्व हिन्दू परिषद धर्मप्रसार विभाग की ओर से पटना क्षेत्र की बैठक डेहरी ऑनसोन में 5–6 जुलाई को संपन्न हुई। बैठक में दक्षिण बिहार, उत्तर बिहार तथा झारखंड से 17 कार्यकर्ता उपस्थित थे एवं क्षेत्र संगठन मन्त्री श्री आनन्द जी पांडे, क्षेत्र मंत्री श्री वीरेन्द्र विमल के साथ–साथ केन्द्रीय मंत्री श्री सुधांशु मोहन पटनायक भी उपस्थित थे। संगठन संरचना–प्रान्त टोली पुनर्गठन करना, चयनित जिला एवं प्रखण्ड के लिए टोली निर्माण करना, सभी दायित्ववान् कार्यकर्ता अपने स्थान पर साप्ताहिक सत्संग प्रारंभ करना, अतिन्युन कार्य को गति देने के लिए माह में चार दिन का प्रवास करना, श्री गुरु पूर्णिमा में संतों का संपर्क और पूजन करना, जहाँ तक संगठन पहुँचा है, अगस्त माह में स्थापना दिवस पालन करना, अगस्त 25 से सितम्बर 10 तारीख के बीच प्रखंड से ऊपर के सभी कार्यकर्ता कार्य विस्तार योजना के अन्तर्गत तीन दिन के लिए निवासी प्रवास करना, अपने प्रान्त में कार्यकर्ता के लिए अभ्यास वर्ग करने के लिए तिथि और स्थान निश्चय करना, प्रान्त स्तर पर प्रान्त की दो दिन की बैठक रचना करना एवं नवम्बर माह 7 तारीख से 11 तारीख तक मोहन जोशी जी की पुण्य तिथि पर समर्पण करने के लिए प्रत्येक कार्यकर्ताओं को प्रेरित करना यही समस्त विषय पर सघन चर्चा हुई। बैठक का संचालन धर्मप्रसार क्षेत्र प्रमुख श्री उपेन्द्र कुशवाहा ने किया, बैठक की व्यवस्था डेहरी ऑनसोन के विशिष्ट व्यवसायी श्री अन्सूल जी, अर्जुन जी देख रहे थे।

विमान दुर्घटना के पीड़ितों की हर सम्भव सहायता किया बजरंग दल ने

अहमदाबाद में दुर्घटनाग्रस्त विमान धू–धू करके जल रहा था, कोई पास जाने को तैयार नहीं था, वहीं बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने अग्नि के कुछ शांत होते ही सेवा करना प्रारंभ कर दिया। विमान दूर्घटना में दिवंगत 275 यात्रियों के शवों को सम्मान पूर्वक पोस्टमार्टम के लिए हॉस्पिटल पहुँचाने में सहयोग किया। रात्रि को डॉक्टरों के साथ समन्वय बनाकर उनके शरीर के अंगों को एकत्रित कर डीएनए टेस्ट के लिए भेजना और दुर्गंध के बीच उस भयावह दृश्य को सहकर सेवा की भावना से बजरंग दल के कार्यकर्ता दिन रात लगे रहे।

सबसे पहले पहुंचा बजरंगदल

विमान दुर्घटना के बाद घटना स्थल पर सबसे पहले बजरंगदल पहुँचा। बजरंगदल किसी भी सरकारी और गैर सरकारी सँस्था के विमान दुर्घटना स्थल पर पहुँचने से पहले पहुँच गया और आग एवं खतरों की परवाह किए बिना, सेवा कार्य में जुट गया। बजरंगदल के शौर्य से मृतकों के शवों को एकत्र कर अस्पताल पहुँचाना आसान हो गया, तो मृतकों के परिजनों का भी भरपुर देखभाल किया बजरंगदल ने।

पीड़ितों के परिजनों की भी सेवा की

दुर्घटना स्थल पर विमान दुर्घटना में हताहत हुए लोगों के परिजन बड़ी सँख्या में एकत्र हो गए थे। सभी अपने परिवार के महत्वपूर्ण सदस्यों को खोने के दुख से आहत थे, लेकिन उनकी चिंता करने का कोई तंत्र वहाँ नहीं था। ऐसे में बजरंगदल ने उनके लिए हर सम्भव सहयता करने की कोशिश की। बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने अपने स्तर से 55,000 पानी की बॉटल, 1500 जीरा सोडा बॉटल, 2000 मसाला छांछ पैकेट, 5000 बिस्कुट पैकेट, 5000 पुलाव के पैकेट की व्यवस्था की। मृतकों के परिवार जनों को ढांढस बँधाते उनके मध्य वितरित किए।

बड़ी सँख्या में जुटे कार्यकर्ता

इस पुनीत कार्य में 263 बजरंगियों ने 72 घंटे डटकर "सेवा है यज्ञ कुंड समिधा सम हम जले " भाव से कार्य किया। यह वही बजरंग दल है, जिसे वामपंथी, सेक्युलरवादी तथाकथित प्रगतीशीलतावादी "हिंदू गुंडा" कहते हैं। सेवा ही जिसका संस्कार होता है, वह किन्हीं के कहने या लिखने से प्रभावित नहीं होते हैं और निरंतर अपना कार्य करते रहते हैं।

सभी जगह सेवारत रहता है बजरंगदल

कुछ समय पूर्व ही पश्चिम महाराष्ट्र के पुणे स्थित इंद्राणी नदी में पानी पुल पर से बह रहा था, पुलिया कमजोर होने से टूट गई, 47 लोग पानी में बहने लगे, तभी बजरंगियों ने बिना प्राणों की चिंता किए छलाँग लगाकर सबको बचाया, एक कार्यकर्ता जिन का स्वयं क्रेन का कार्य है, वह अपनी क्रेन से बचाव कार्य प्रारंभ किया और जो मलबे में दब गए थे, उन्हें सुरक्षित निकाला।

बजरंगदल के लिए सेवा प्रथम कार्य

बजरंग दल के कार्यकर्ता सेवा करना अपना प्रथम कार्य मानकर करते रहे हैं। अभी 1 से 7 जुलाई को सेवा सप्ताह में 5 लाख 70 हजार से ज्यादा वृक्षारोपण किया, मंदिरों की सफाई, श्मशान घाटों की सफाई, नदी की सफाई और 3000 से अधिक चिकित्सा शिविर लगा कर 66,000 से अधिक रोगियों का उपचार कर मुफ्त दवा वितरण कर उन्हें स्वस्थ रखने के कार्य में सहयोग किए। लगातार सेवा के कार्य कर बजरंग दल अपने ध्येय को सिद्ध कर रहे हैं। सुरक्षा की जिम्मेदारी भी समाज की अपनी जिम्मेदारी है, इसके लिए शौर्य प्रशिक्षण वर्गो में युवाओं को आत्मविश्वास से युक्त साहसी पराक्रमी और शौर्यवान युवा बनाने का प्रयत्न किया जाता है। युवा आपातकालीन स्थितियों में सेवा कार्य कर अपने संगठन के बोध वाक्य – सेवा, सुरक्षा, संस्कार को सिद्ध करता है।

रिपोर्ट– जितेन्द्र सिंह पवार (क्षेत्र संगठन मंत्री – विहिप– भोपाल क्षेत्र)।

विहिप के धर्माचार्यों की व्यापक बैठक में समस्त महाराज, संत मंडली की आग्रही भूमिका

पंढरपुर, 9 जुलाई। 'सावधान, वारी में अर्बन नक्सलवाद घुस गया है,' हिंदू सँस्कृति और विचारधारा को तोड़ने का षड्यंत्र है यह। यदि इनका समय रहते बंदोबस्त नहीं किया गया, तो आने वाले समय में वारी, दिंडी और आषाढ़ी सोहळा में इनका घातक प्रदूषण देखने को मिलेगा, ऐसी चिंता व्यक्त करते हुए समस्त संत, महंत और धर्माचार्यों ने फड और दिंडी चालकों से सतर्कता बरतने की अपील की है। सरकार के समक्ष इस बात का ध्यानाकर्षण कराया जाए और वारी में ऐसे घुसपैठियों पर प्रतिबंध लगाया जाए, ऐसी एकमुखी मांग विश्व हिंदू परिषद की धर्माचार्य व्यापक बैठक में की गई।

मंगलवार 8 जुलाई को पंढरपुर के कुकुरमुंडे महाराज मठ में विठ्ठल महाराज वडगांवकर की अध्यक्षता में यह बैठक संपन्न हुई। विहिप के केंद्रीय सहमंत्री हरिशंकर जी ने मार्गदर्शन किया। श्री हरिशंकर जी ने कहा कि 'शुरुआत हमें स्वयं से करनी चाहिए। चिंतन करना होगा जिससे समाधान प्राप्त हो। नवीन पीढ़ी को क्या चाहिए, इसका ध्यान रखें। उनके ऊपर सँस्कार किए जाने चाहिए। आस्था और परंपराओं को संजोने का भाव होना चाहिए। पंढरपुर का भी विकास होना चाहिए, ऐसी भी हमारी भूमिका है।

'बैठक के अध्यक्ष विठ्ठल वडगांवकर ने वारी परंपरा में घातक विचारों को समाप्त करने का आह्वान किया। पालखी सोहळा की परंपरा को बनाए रखने की अपील करते हुए उन्होंने सरकार से पंढरपुर के पुराने मठों को अनुदान निधि प्रदान करने का सुझाव भी दिया। यात्रा हिंदुओं की है, लेकिन लाभार्थी मुस्लिम हैं, ऐसा पंढरपुर की वारी का चित्र है, इसलिए 'जिसके कपाळ पर गंध, वही हमारा बंधु' समझकर खरीद–फरोख्त होनी चाहिए, ऐसा आशुतोष बडवे महाराज ने कहा। वारी में ढोल–ताशे और हलग्या आ गए हैं। वाद्य यंत्रों का प्रदूषण वारी में नहीं चाहिए, पखावज हमारा वाद्य है, ऐसा उन्होंने जोड़ा। महादेव शास्त्री बोराडे महाराज ने कहा कि 'प्रयागराज का कुंभ मेला पैटर्न वारी में होना चाहिए, क्योंकि भीड़भाड़ वाले स्थानों पर रास्ते संकरे हैं, बड़ी दुर्घटना हो सकती है। साथ ही कई मंत्री वारी में आते हैं, जिससे वारकरियों को परेशानी होती है।' अनिकेत महाराज मोरे (देहू) ने कहा 'वारी में संविधान दिंडी बुद्धिभेद का प्रकार है। सेक्युलर विचार थोपने का घुसपैठियों द्वारा प्रयास किया जा रहा है। विमर्श करें, अर्बन नक्सलवाद का खतरा समय रहते पहचानें।' भागवत चवरे महाराज ने कहा 'वारी में घुसपैठियों का समय रहते बंदोबस्त करें।' निवृत्ती नामदास महाराज ने कहा 'वारकरी संप्रदाय को परंपरा जपनी चाहिए। वारी में गिटार बजाया जाता है, यह निंदनीय प्रकार है। आगे चलकर घुसपैठिया कौन–कौन से वाद्य लाएंगे, इसका अनुमान नहीं है। 'पुष्कर गोसावी महाराज पैठणकर ने कहा 'वारी करने के बजाय वारी को जियो, आचारसंहिता तय करो। वारी का दंडक होना चाहिए।' प्रकाश जवंजाळ महाराज ने आक्रमकता से कहा 'हिंदू सँस्कृति तोड़ने का अर्बन नक्सलवादियों का षड्यंत्र है। सप्ताह, वारी, हरिपाठ में भी उनकी घुसपैठ हो चुकी है। अर्बन नक्सलवाद सिर उठा चुका है। संत ज्ञानोबा और संत तुकोबा का विचार संविधान पर आधारित है। वारकरी समता का विचार मंड़ता है। कीर्तन, शाहिरी, कविता के माध्यम से वारकरी भक्तों में बुद्धिभेद किया जा रहा है। 'रामकृष्ण वीर महाराज ने मंदिरों के सरकारीकरण के खिलाफ मांग की जो विहिप की भी मांग है। उन्होंने कहा 'मुख्यमंत्री का बयान चिंताजनक है। 'या रे या सारे या' इसका क्या मतलब? एजेंडा लागू करने के लिए वारी में न आएँ। फड और परंपरा को मजबूत करें।' रामेश्वर शास्त्री ने इस प्रकार की चिंता व्यक्त की और वारकरियों की चिंतन बैठक आयोजित करने का सुझाव दिया। डॉ. महेश महाराज देहूकर ने कहा 'वारी में प्रदूषण नहीं चाहिए, यह महाराज लोगों का बन गया है।' सनातन हिंदू राष्ट्र के सुनील घनवट ने कहा 'पंढरपुर सहित राज्य के अन्य तीर्थक्षेत्रों को हमेशा मांस और मदिरा मुक्त रखा जाए।' परशुराम डोंबे महाराज (बार्शी) ने कहा 'फडकरी सुधरेगा तो वारकरी सुधरेगा।' महादेव यादव महाराज, अभय कुलकर्णी इचगांवकर, संदीपान महाराज हासेगांवकर, अक्षय महाराज भोसले, उद्धव महाराज कुकुरमुंडे सहित अन्य वारकरी महाराज मंडल ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

धर्माचार्य बैठक का संचालन विहिप प्रांत धर्माचार्य संपर्क प्रमुख माधवदास राठी ने किया। इस अवसर पर धार्मिक विभाग महाराष्ट्र राज्य प्रमुख संजय मुद्राळे, संगठन मंत्री अनिरुद्ध पंडित, सहसंपर्क प्रमुख नागनाथ बोंगरगे, विभाग सहमंत्री विजयकुमार पिसे, समीर पायगुडे, धनंजय वासाडे आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे। चौकट : बैठक में इन बिंदुओं पर भी ध्यान आकर्षित किया गया–टेंभुर्णी से करकंब पंढरपुर रास्ता चौपदरीकरण, कॉरिडॉर, निर्मल वारी, सरकार की प्रशासनिक व्यवस्था, पर्यावरण, प्रदूषण, प्लास्टिक कचरा निष्कासन, प्रयागराज कुंभ की भांति एक थाली–एक थैली और शिवाजी महाराज के शिवराज्याभिषेक की तर्ज पर आयोजन–इन विषयों पर धर्माचार्यों ने चर्चा की।

sdmurdale@gmail.com

OUR
FASTENERS
ARE USED IN
EVERY SEGMENT
LPS BOSSARD
Proven Productivity
LPS Bossard Sustainable Campus
Our Social Initiatives
Mammography Bus
Tree Plantation
Bus for Eye & General Health Check-Ups
Blood Donation Bus
LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10, Delhi-Rohtak Road Kharawar Bye Pass Rohtak-124001
Ph. +91-1262-205205 | india@lpsboi.com
www.bossard.com
RAJESH JAIN
MD, LPS Bossard

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.07.2025
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

RO - 176 (1-1)

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी